A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 17 अगस्त, 2025

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 307, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर मुख्यमंत्री निवास में आयोजित श्रीकृष्ण पर्व में शामिल बाल गोपालों का मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के साथ समूह चित्र। फोटो: प्रवीण वाजपेई

सुप्रभात

भात है बासी किसी का
कौन सा अहसान है,
है गमों से दोस्ती सुख
अनकहा मेहमान है।

अब तो लुट जाने के डर से
भी हुए आज़ाद हम,
पास अपने कौन सा
कुछ कीमती सामान है।

शर्त,समझौते सिरे से हैं
नहीं मंज़ूर कुछ,
ज़िंदगी अपने लिए
सौभाग्य है वरदान है।

खौफ का हम पर असर
कोई कभी चलता नहीं,
दिल मुहब्बत के लिए
हमने किया कुर्बान है।

भूलकर आते नहीं वे
सब हमारे सामने,
चोर हो गुंडा ,
लुटेरा या जो बेईमान है।

आपके दु:ख हैं बहुत से
रोइये उनके लिए,
खेत हैं,खर्यान हैं,
घर द्वार है सम्मान है।

लोग हँसते हैं उड़ाते हैं
सुगम की खिल्लियां,
जो कहें कहते रहें
अपनी यही पहचान है।

– महेश कटारे 'सुगम'

79वें स्वतंत्रता दिवस पर पीएम मोदी के बड़े ऐलान

रोजगार योजना, सुदर्शन चक्र मिशन और जीएसटी में होगी बड़ी कटौती

● पहली सेमीकंडक्टर चिप, ऊर्जा आत्मनिर्भरता और घुसपैठ की बात

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के 79वें स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले के प्राचीर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 103 मिनट तक देश को संबोधित करते हुए आने वाले दशक का रोडमैप रखा और कई अहम घोषणाओं से नई दिशा का संकेत दिया। उन्होंने युवाओं के लिए एक लाख करोड़ रुपये की प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना की शुरुआत करते हुए बताया कि निजी क्षेत्र में पहली नौकरी पाने वालों को 15,000 रुपये की सहायता मिलेगी। राष्ट्रीय सुरक्षा को अभेद्य बनाने के लिए सुदर्शन चक्र मिशन का ऐलान किया, तो आम नागरिकों को राहत देने के लिए

दिवाली पर जीएसटी दरों में कटौती का भरोसा दिलाया। तकनीकी मोर्चे पर, इस साल के अंत तक देश में बनी पहली सेमीकंडक्टर चिप बाजार में उतारने की घोषणा हुई।

● **पहली प्राइवेट नौकरी पर मिलेंगे 15 हजार**– मोदी ने प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना की घोषणा की, जिसके तहत प्राइवेट सेक्टर में पहली नौकरी पाने वालों को सरकार से 15,000 रुपये मिलेंगे। प्रधानमंत्री ने कहा है कि हमारे युवा भविष्य का आधार हैं और रोजगार उन्हें मजबूती प्रदान करेगा इसलिए देश के युवाओं के लिए एक लाख करोड़ रुपये की प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना बनाई गई है। यह आज से ही लागू की जा रही है। उन्होंने कहा कि कि आज 15 अगस्त है। देश के युवाओं को रोजगार के अवसर सुनिश्चित करने के लिए आज से ही युवाओं के लिए एक लाख करोड़ रुपये की योजना लागू की जा रही हैं। कंपनियों को भी प्रोत्साहित करने की योजना बनाई गई है।

आज फाइनल हो जाएगा एनडीए का उम्मीदवार

● 21 अगस्त को नामांकन, भाजपा संसदीय बोर्ड की बैठक में होगा फैसला

नई दिल्ली (एजेंसी)। उपराष्ट्रपति पद के लिए एनडीए कैंडीडेट के नाम पर 17 अगस्त को मुहर लगेगी। न्यूज एजेंसी ने सूत्रों के हवाले से बताया कि भाजपा संसदीय बोर्ड की बैठक रविवार शाम 6 बजे होगी, इसमें उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार का नाम फाइनल किया जा सकता है। यह कैंडीडेट 21 अगस्त को नामांकन दाखिल करेगा। इस दौरान एनडीए शासित राज्यों के सभी मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री भी शामिल होंगे। उधर विपक्षी गठबंधन के नेता भी उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार पर चर्चा के लिए 18 अगस्त को बैठक कर सकते हैं। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे इंडिया ब्लॉक लीडर्स के साथ बातचीत कर रहे हैं। उपराष्ट्रपति चुनाव के लिए 9 सितंबर को वोटिंग होगी। उसी दिन मतगणना भी होगी। नामांकन दाखिल करने की आखिरी तारीख 21 अगस्त है। 25 अगस्त तक उम्मीदवारी वापस ली जा सकती है। दरअसल, जगदीप धनखड़ ने 21 जुलाई की रात अचानक उपराष्ट्रपति के पद से इस्तीफा दे दिया था।

विरासतों को सहेजने हम हैं प्रतिबद्ध, महलपुर पाठा मंदिर को बनायेंगे भव्यतम : मुख्यमंत्री

भगवान श्रीकृष्ण ने सिर पर मोर मुकुट धारण कर दिया ग्रामीण संस्कृति को सर्वोपरि रखने का संदेश

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि विरासत से विकास हमारा मूल मंत्र है। हम अपने तंत्र को भी इसी मंशा के अनुरूप तैयार कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि अपनी समृद्धशाली संस्कृति और विरासतों को बेहतर तरीके से सहेजकर उन्हें संवारने के हमारे प्रयास हमेशा जारी रहेंगे। महलपुर पाठा के अतिप्राचीन श्रीराधा कृष्ण मंदिर का सभी संभव तरीके से जीर्णोद्धार और परिसर का विकास कर इसे भव्यतम स्वरुप प्रदान करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर रायसेन जिले के गैरतगंज के महलपुर पाठा स्थित मंदिर परिसर में आयोजित श्री कृष्ण पर्व कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में राज्य सरकार तेजी से विकास कार्यों के लक्ष्य हासिल करते हुए आगे बढ़ रही है। जल्द ही प्रदेश के दो बड़े शहर इंदौर और भोपाल मेट्रोपोलिटन सिटी के रूप में विकसित होंगे। राजधानी भोपाल से सटा जिला रायसेन, सांची और विदिशा भी मेट्रोपोलिटन सिटी का हिस्सा बनेगा। यही नहीं राजगढ़ और नर्मदापुरम भी मेट्रोपोलिटन क्षेत्र में शामिल होंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मेट्रोपोलिटन सिटी विकसित होने पर रायसेन क्षेत्र के युवाओं को भी रोजगार के अवसर मिलेंगे। उन्होंने कहा कि रायसेन जिले के विकास के लिए सभी जरूरी कदम उठाए जाएंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सांची विधानसभा क्षेत्र को 136 करोड़ रुपए के कई विकास कार्यों की सौगात भी दी। उन्होंने रिमोट का बटन दबाकर लोक निर्माण विभाग के 15 कार्य सहित जनजातीय ग्रामों तक सड़क निर्माण और अनेक विकास कार्यों का भूमि-पूजन किया। साथ ही विभिन्न योजनाओं में हितलाभ वितरण किए। मुख्यमंत्री ने मंदिर परिसर में पौद्यरोपण भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंदिर में पूजा-अर्चना की। गौमाता का पूजन कर पशुआहार खिलाया।

हाथी-घोड़ा पालकी, जय कन्हैयालाल की

नई दिल्ली (एजेंसी)। शनिवार को देशभर में कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व बड़े ही धूम-धाम से मनाया गया। लोगों में भगवान के जन्मोत्सव को लेकर काफी उत्साह रहा। मथुरा, वृंदावन में भक्तों का तांता लगा रहा। मथुरा-वृंदावन में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की धूम है। वृंदावन में 10 लाख भक्त मौजूद हैं। बांके बिहारी मंदिर के बाहर दर्शन करने वालों की लंबी लाइनें लगी रहीं। श्रीकृष्ण जन्मभूमि पर ठाकुरजी को अर्पित होने वाली पोशाक को 6 महीने में मथुरा के कारीगरों ने तैयार किया है। इसमें सोने-चांदी के तारों का इस्तेमाल किया गया है। कपड़े में इंद्रधनुष के 7 रंगों को रखा गया है। श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर को 'ऑपरेशन सिंदूर' की

● देश भर में जन्माष्टमी की धूम, हर्षोल्लासा ने मना कान्हा का जन्मदिन

थीम पर सजाया गया है। जिस फूल बंगला में ठाकुरजी विराजे हैं, उसे सिंदूरी फूलों से सजाया गया है। ये फूल कोलकाता और बेंगलुरु से मंगाए गए हैं। मुंबई के दादर इलाके में जन्माष्टमी के मौके पर दही हांडी का आयोजन किया गया। इसमें युवाओं ने उत्साह से भाग लिया। जन्माष्टमी का त्योहार पूरे बिहार धूमधाम से मनाया गया। पटना इस्कॉन में जन्माष्टमी को लेकर भव्य आयोजन किया गया। 80 क्विंटल फूल से पूरे मंदिर परिसर को सजाया गया है। इस बार मंदिर की सजावट 'वृंदावन' थीम पर की गई है। भगवान का 251 चांदी के कलश और शंख से अभिषेक किया गया। छत्तीसगढ़ के रायपुर में कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव धूमधाम से मनाया जा रहा है। टाटीबंध के इस्कॉन टेंपल में 3 दिन का जन्माष्टमी महोत्सव चल रहा है। जैतूसाव मठ में भगवान को भोग लगाने के लिए 1100 किलो मालपुआ तैयार किया गया है। मठ में भजन संध्या, जन्म आरती कर राजभोग ठाकुरजी को लगाया जाएगा। चित्तौड़गढ़ दुर्ग में स्थित चारभुजा नाथ जी का मंदिर यहां के लोगों की गहरी आस्था और श्रद्धा का केंद्र है। इसके भीतर विराजमान ठाकुर जी की मूर्ति हजारों साल पुरानी मानी जाती है। चारभुजा नाथ जी के रूप में विराजित इस प्रतिमा को लेकर भी दावा है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 35°c
न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 17 अगस्त 2025

"जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।"
चाणक्य नीति

भगवान श्रीकृष्ण ने कर्म और धर्म के पथ पर अडिग रहना सिखायाः मुख्यमंत्री

- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेशवासियों को दी श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की बधाई
- सदैव पाथेय रहेगी अत्याचारों के विरुद्ध भगवान श्रीकृष्ण की वीरोचित भूमिका

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेशवासियों को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्व की बधाई एवं मंगलकामनाएं दी हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण हमें जीवन की कठिनाइयों में भी मुस्कुराना सिखाते हैं, जिनको कोई तृष्णा नहीं, उनका नाम ही श्रीकृष्णा है। भगवान श्रीकृष्ण का जीवन अनेक कष्ट और संघर्षों से भरा रहा, फिर भी वे अपने कर्त्तव्य से विमुख नहीं हुए। उनका जीवन हम सभी के लिए सदैव प्रेरणादायी है। उन्होंने एक ओर जहां कालिया नाग को काबू में करके उसके फन पर नृत्य कर जीवन के कठिन से कठिन समय में मुस्कुराना सिखाया, वहीं दूसरी ओर कंस जैसे दुराचारी और अत्याचारी को उसके घर में मारकर साहस और वीरता के लिए प्रेरित किया। अत्याचारों के विरूद्ध उनकी वीरोचित भूमिका आने वाली पीढ़ियों के लिए सदैव पाथेय रहेगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जारी संदेश में कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने महाभारत के भीषण युद्ध के बीच कर्मवाद के सिद्धांत से बताया कि चाहे कैसी भी विकट परिस्थिति हो, हमें बुद्धि और धैर्य का परिचय देते हुए सदैव कर्म और धर्म के सद्मार्ग पर अडिग रहना चाहिए। जीवन के हर पड़ाव में गोपाल श्रीकृष्ण के विविध रूप नजर आते हैं। इनमें गोवर्धनधारी श्रीकृष्ण, श्रीराधा-कृष्ण, विराट रूपधारी श्रीकृष्ण, योगीराज श्रीकृष्ण और द्वारकाधीश श्रीकृष्ण शामिल हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि श्रीकृष्ण ललित कलाओं में पारंगत थे। उन्होंने विश्व को कलाओं से परिचित कराया। वे हम सबके लिए सदैव पूजनीय हैं और रहेंगे। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर मुख्यमंत्री निवास में आयोजित श्रीकृष्ण पर्व में शामिल बाल गोपालो ने मटकी फोड़ कार्यक्रम में सहभागिता की।

कुशाभाऊ ठाकरे की प्रतिमा पर सीएम ने किया माल्यार्पण

बोले- भगवान कृष्ण के समान उन्होंने भी संघर्ष किया, कई लोगों के आंसू पोंछे

भोपाल (नप्र)। बीजेपी के संस्थापक सदस्य कुशाभाऊ ठाकरे के जन्म दिवस पर शनिवार को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव कुशाभाऊ ठाकरे अंतरराष्ट्रीय कन्वेंशन सेंटर पहुंचे और परिसर में स्थित ठाकरे की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।

इस मौके पर उन्होंने कहा कि कृष्ण भगवान के समान ही ठाकरे जी ने संघर्ष किया। उन्होंने कई लोगों को खड़ा किया। इसके बाद मुख्यमंत्री शौर्य स्मारक पहुंचे और पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी को पुष्पांजलि अर्पित की। ठाकरे सभागार से मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि श्री कृष्ण का कहां उनका जन्म हुआ यह पता नहीं है। बालपन में ही उन्होंने अपने कामों को पहचाना और कंस का वध किया। उन्होंने कहा कि श्री कृष्ण ने कंस के घर मक्खन जाते देखा और फिर मटकी फोड़ कर आक्रोश व्यक्त किया। उनके सत्याग्रह, विद्रोह की शक्ति माखन के रूप में थी।

श्रीकृष्ण का जीवन हमें प्रेरणा देता रहेगा

मुख्यमंत्री ने एक्स पर प्रदेशवासियों को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की शुभकामनाएं देते हुए लिखा कि जीवन के संघर्षों और कष्टों के बीच जिस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण ने आदर्श जीवन का उदाहरण प्रस्तुत किया, वह हम सभी को सदैव प्रेरणा देता रहेगा। इस पावन पर्व पर मैं भगवान श्री गोपालकृष्ण से सभी के सुख, शांति, समृद्धि एवं कल्याण की मंगलकामना करता हूं।

वाजपेयी को पुष्पांजलि दी

इसके बाद मुख्यमंत्री शौर्य स्मारक पहुंचे। पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी की पुण्यतिथि पर अटल जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। इस मौके पर भाजपा के संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा, भोपाल सांसद आलोक शर्मा, मंत्री विश्वास सारंग, कृष्णा गौर, विधायक रामेश्वर शर्मा, भगवानदास सबनानी, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा, महापौर मालती राय सहित भाजपा के पदाधिकारी और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

हम जैसे कार्यकर्ता तैयार करने में प्रचारकों की पीढ़ी खत्म हो जाती

मुख्यमंत्री ने कहा कि हममें से कई कार्यकर्ता बड़ी जगहों पर पहुंच रहे हैं, लेकिन बड़ी जगह पहुंचने में हमारा योगदान थोड़ा है। हमारे जैसे कई कार्यकर्ताओं के लिए प्रचारकों की कई पीढ़ी खत्म हो जाती हैं। वो आपकी प्रगति में खुश होते हैं। ऐसी कई पीढ़ियां खत्म हुईं तब तो अटल जी और नरेन्द्र मोदी जी प्रधानमंत्री बने। जो सबकी आशाओं आकांक्षाओं के आधार पर दुनिया में भारत का नाम बढ़ा रहे हैं। भाजपा हो या संघ। उनकी सौ साल की यात्रा है। इन सौ सालों में देश का परिदृश्य बदला है। किसी भी काम में कोई व्यक्ति आगे बढ़े तो पूरा समाज मदद के लिए खड़ा होता है। ये बातें बोलने में कितनी सरल हैं अगर ऐसा नहीं होता तो मोदी जी वहां कैसे होते और हम कहां होते? हमारे संगठन का भाव है कि हम उसकी क्षमता, योग्यता और उसके सुधार के लिए मौका देते हैं। गलती हो जाए तो उसे घर पर बिठाकर समझाते हैं। बाद में उसे आगे बढ़ाने के लिए तारीफ भी करते हैं।

'वोट चोरी' के आरोपों से घिरा ईसी आज देगा जवाब

- बुलाई प्रेस कॉन्फ्रेंस, गंभीर सवालों के जवाब देने की तैयारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत निर्वाचन आयोग (ईसीआई) ने घोषणा की है कि वह कल रविवार को दोपहर 3 बजे नई दिल्ली के राष्ट्रीय मीडिया केंद्र में एक महत्वपूर्ण प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित करेगा। यह जानकारी आयोग के डायरेक्टर जनरल (मीडिया) द्वारा दी गई है। इस प्रेस कॉन्फ्रेंस में निर्वाचन आयोग के वरिष्ठ अधिकारी महत्वपूर्ण घोषणाएं और अपडेट साझा कर सकते हैं, जो आगामी चुनावों और मतदाता सूची संशोधन से संबंधित हो सकते हैं। इसके अलावा, 'वोट चोरी' के गंभीर आरोपों से घिरा भारत निर्वाचन आयोग अब इन आरोपों पर अपनी स्थिति स्पष्ट कर सकता है। दरअसल यह प्रेस कॉन्फ्रेंस ऐसे समय में हो रही है, जब विपक्षी दलों, खास तौर पर कांग्रेस और उसके नेता राहुल गांधी ने मतदाता सूची में कथित धांधली और 'वोट चोरी' के आरोप लगाकर आयोग की निष्पक्षता पर सवाल उठाए हैं। पिछले कुछ महीनों से, विशेष रूप से 2024 के लोकसभा चुनावों और उसके बाद हुए विधानसभा चुनावों के बाद, विपक्षी दलों ने मतदाता सूची में व्यापक पैमाने पर अनियमितताओं का आरोप लगाया है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने 7 अगस्त को नई दिल्ली में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कर्नाटक के बेंगलुरु मध्य लोकसभा सीट के महादेवपुरा विधानसभा क्षेत्र का हवाला देते हुए दावा किया था कि लगभग 1,00,250 वोटों की चोरी हुई। उन्होंने मतदाता सूची में डुप्लीकेट वोटर, फर्जी पते, और एक ही पते पर सैकड़ों वोटरों के नाम होने जैसे गंभीर आरोप लगाए। राहुल ने यह भी कहा कि अगर यह धांधली न हुई होती, तो कांग्रेस कर्नाटक में 16 लोकसभा सीटें जीत सकती थी, लेकिन उसे केवल 9 सीटें मिलीं। इसके अलावा, राहुल गांधी ने महाराष्ट्र और हरियाणा के चुनावों में भी मतदाता सूची में अनियमितताओं का दावा किया, जिसमें पांच महीनों में असामान्य रूप से लाखों वोटरों के नाम जोड़े जाने की बात कही गई। उन्होंने निर्वाचन आयोग पर भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के साथ मिलीभगत का आरोप लगाया और मांग की कि आयोग डिजिटल और मशीन-रीडेबल मतदाता सूची सार्वजनिक करे। हालांकि, प्रेस कॉन्फ्रेंस के एजेंडे के बारे में अभी तक कोई आधिकारिक जानकारी साझा नहीं की गई है, लेकिन माना जा रहा है कि चुनाव आयोग वोट चोरी के आरोपों पर जवाब दे सकता है।

लोग तैयार नहीं हुए, तो अपनी हार मान लूंगा

- पूर्ण राज्य के लिए हस्ताक्षर अभियान चलाएंगे सीएम उमर

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला पूर्ण राज्य का दर्जा हासिल करने के लिए अब हस्ताक्षर अभियान की शुरुआत करेंगे। पूर्ण राज्य की बहाली को लेकर सुप्रीम कोर्ट में चल रही सुनवाई के बाद शुक्रवार को मुख्यमंत्री ने इस अभियान की घोषणा करते हुए कहा कि वह इन हस्ताक्षरों को सुप्रीम कोर्ट में पेश करेंगे। इतना ही नहीं सुनवाई में पहलगाम हमले का जिक्र आने पर सीएम न कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि क्षेत्र के लोगों को ऐसे अपराध की सजा दी जा रही है, जिसमें उनका कोई हाथ नहीं है। बख्शी स्टेडिम में स्वतंत्रता दिवस पर अपने संबोधन में मुख्यमंत्री ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने सरकार को जवाब देने के लिए आठ हफ्ते का समय दिया है। उन्होंने कहा,आज से, हम इन आठ सप्ताह का उपयोग सभी 90 विधानसभा क्षेत्रों में घर-घर जाकर राज्य का दर्जा बहाल करने के लिए हस्ताक्षर अभियान चलाने में करेंगे। अगर लोग दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने को तैयार नहीं हैं, तो मैं अपनी हार मान लूंगा। हमें इन आवाजों को अपने दफ्तरों से उन दरवाजों (सुप्रीम कोर्ट) तक ले जाना होगा, जहां पर फैसले लिए जाते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा,उच्चतम न्यायालय में दुर्भाग्यपूर्ण टिप्पणी की गई कि राज्य का दर्जा बहाल करने का फैसला लेते समय पहलगाम हमले को भी ध्यान में रखा जाए।

खून से सने शव और मलबे में बिखरे पड़े हैं लोगों के अंग

- भयावहता बयां कर रही है किश्तवाड़ में आई आपदा
- अस्पताल में भी हाहाकार, अब तक 65 शव बरामद
- सीएम अब्दुल्ला से युवक बोला-हमें बस डेड बॉडी दे दो

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ जिले के चसोती गांव में गुरुवार को अचानक आए बादल फटने और फ्लैश फ्लड ने भारी तबाही मचा दी। खून से सने शव, मलबे में दबे घायल और टूटे हुए अंग इस आपदा की भयावहता को बयां कर रहे हैं। सुरक्षा कर्मी, स्थानीय लोग और सेना घंटों की कड़ी मशक्कत के बाद लोगों को मलबे से निकालकर अस्पताल पहुंचा रहे हैं। अस्पताल में भी हालात चिंताजनक बनी हुई है। फर्श पर मरीजों का उपचार हो रहा है। मलबे में दबने से अब तक 65 लोगों की मौत हो चुकी है। अब तक 34 शवों की पहचान की जा चुकी है। 500 से ज्यादा लोग रेस्क्यू किए गए हैं, जबकि 200 लोग अब भी लापता हैं। घायलों की संख्या 180 है, जिनमें से 40 की हालत गंभीर है। सभी घायलों को किश्तवाड़-जम्मू के अस्पतालों में भर्ती किया गया है। 75 लोगों की डिटेल उनके परिजन ने प्रशासन को दी है। रेस्क्यू में एनडीआरएफ की 3 टीमें, सेना (300+ जवान), व्हाइट नाइट कोर मेडिकल टीम, पुलिस, एसडीआरएफ और अन्य एजेंसियां रेस्क्यू में जुटी हैं। जम्मू-कश्मीर के सीएम उमर अब्दुल्ला आज चसोटी पहुंचे। उन्होंने आपदा पीड़ितों से मुलाकात की और उन्हें हर संभव मदद का आश्वासन दिया। इस पर एक शख्स ने उनसे कहा- हमें कुछ नहीं चाहिए, आप सब अपने घर ले जाओ, हमें सिर्फ डेडबॉडी दे दो। मेरी मां-मौसी लापता हैं। युवक ने आरोप लगाया कि यहां पर 20 जेसीबी आई हैं, हम कल से देख रहे हैं कि सिर्फ 2 ही जेसीबी काम कर रही हैं। आज आप आए तो इन्हें चालू किया गया। जब कोई नेता आता है तो जेसीबी चालू कर दी जाती हैं।

पंजाब के भारत-पाक बॉर्डर रिट्रीट का समय बदला

अमृतसर (एजेंसी)। पंजाब के तीन प्रमुख भारत-पाकिस्तान सीमा बिंदुओं पर रिट्रीट सेरेमनी का समय बदल दिया गया है। यह बदलाव अटारी (अमृतसर), हुसैनीवाला (फिरोजपुर) और सादकी (फाजिल्का) बॉर्डर पर किया गया है। दिन छोटे होने और सूर्य के ढलने के समय में बदलाव को देखते हुए अब रिट्रीट शाम 6.00 बजे से 6.30 बजे तक होगी, जबकि पहले यह शाम 7 बजे तक होती थी। बीएसएफ अधिकारियों के अनुसार यह फैसला मौसम में बदलाव को ध्यान में रखते हुए लिया गया है। नए समय के तहत पर्यटकों के लिए समारोह देखना और भी आसान हो जाएगा। अटारी-वाघा, हुसैनीवाला और सादकी की यह सेरेमनी देशभक्ति और आकर्षक प्रदर्शन के कारण हमेशा पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र रही है।

- जेलेंस्की को बुलावा, पुतिन से फिर होगी बात

अलास्का बैठक के बाद नई तैयारी में डोनाल्ड ट्रंप

कीव (एजेंसी)। पुतिन से बातचीत के बाद ट्रंप ने यूक्रेनी राष्ट्रपति जेलेंस्की को बुलावा भेजा है। इसके बाद वह पुतिन से एक और दौर की बातचीत करने की तैयारी में हैं। इसको लेकर ट्रंप ने ट्रुथ सोशल पर लिखा है कि राष्ट्रपति जेलेंस्की सोमवार दोपहर डीसी ओवल ऑफिस आ रहे हैं। अगर सब कुछ ठीक रहा तो प्रेसीडेंट पुतिन के साथ फिर से मीटिंग होगी। उन्होंने आगे लिखा कि रूस और यूक्रेन के बीच इस खतरनाक युद्ध को खत्म करने का तरीका है, शांति समझौता। केवल संघर्ष विराम समझौते से बात नहीं बनेगी। इससे पहले ट्रंप और पुतिन के बीच अलास्का में हुई बैठक के बाद यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की की पहली प्रतिक्रिया आई। जेलेंस्की ने कहा कि वह सोमवार को अमेरिकी राष्ट्रपति से मुलाकात के लिए वॉशिंगटन रवाना होंगे। पुतिन से मीटिंग के बाद ट्रंप ने जेलेंस्की को फोन किया था। इस दौरान ट्रंप ने उन्हें रूसी राष्ट्रपति के साथ हुई बातचीत के अहम बिंदुओं के बारे में जानकारी दी। इस बातचीत में बाद में ब्रिटिश प्रधानमंत्री समेत कई अन्य यूरोपियन नेता भी शामिल हुए। जेलेंस्की ने कहा कि अलास्का में पुतिन और ट्रंप की मुलाकात के बाद शनिवार को अमेरिकी राष्ट्रपति के साथ उनकी लंबी और सार्थक बातचीत हुई। गौरतलब है कि ट्रंप और पुतिन के बीच हुई बैठक में रूस-यूक्रेन युद्ध समाप्त को लेकर कोई सहमति नहीं बन पाई। जेलेंस्की ने इस बारे में एक्स पर भी पोस्ट किया है। उन्होंने लिखा कि सोमवार को मैं प्रेसीडेंट ट्रंप से डीसी में मिलूंगा। इस दौरान मौतों और युद्ध को खत्म करने पर चर्चा होगी। उन्होंने आगे लिखा कि मैं इस आमंत्रण के लिए शुक्रगुजार हूं।

भारत विभाजन पर एनसीईआरटी का नया कंटेंट

- कांग्रेस, जिन्ना और माउंटबेटन को बताया दोषी

नई दिल्ली (एजेंसी)। एनसीईआरटी ने क्लास 6 से 8 और 9 से 12 के लिए 2 नए मॉड्यूल जारी किए हैं। नियमित किताबों से अलग ये मॉड्यूल्स देश के बंटवारे की विभीषिका पर आधारित हैं। इसमें मोहम्मद अली जिन्ना, कांग्रेस पार्टी और लॉर्ड माउंटबेटन को बंटवारे का दोषी बताया गया है। मॉड्यूल बताता है कि जिन्ना ने बंटवारे की मांग की, कांग्रेस ने इसे स्वीकार कर लिया और माउंटबेटन ने इसे लागू कर दिया। ये जानकारी विभाजन के दोषी टॉपिक में जोड़ी गई है। मॉड्यूल में देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के एक भाषण का अंश भी शामिल किया गया है। नेहरू ने कहा था,हम एक ऐसी स्थिति पर आ गए हैं जहां हमें विभाजन को स्वीकार करना होगा।

कुत्तों के समर्थन में अभियान, सैकड़ों शामिल

इंदौर। स्वतंत्रता दिवस पर शहर में कुत्तों के समर्थन में जागरूकता और हस्ताक्षर अभियान ने जोर पकड़ा। रीगल पर हुए विरोध के बाद, 15 अगस्त को पलासिया स्थित 'आई लव इंदौर' पॉइंट पर सैकड़ों लोग एकत्रित हुए और मूक प्राणियों के अधिकारों के लिए हस्ताक्षर किए। अभियान में कई संस्थाओं के साथ शहर के पशु प्रेमी, पशु चिकित्सक, महिलाएं, बच्चे और विभिन्न वर्गों के लोग शामिल हुए। एनिमल लवर भावना जादौन ने बताया कि मात्र एक संदेश पर सैकड़ों लोग जुट गए। उन्होंने कहा कि हम सिर्फ कुत्तों ही नहीं, बल्कि पूरी प्रकृति के लिए संवेदनशील हैं और किसी भी मूक प्राणी के साथ अन्याय नहीं होना चाहिए। सभा सुबह 11 बजे शुरू होकर दोपहर 1 बजे तक चली, जिसमें लोगों ने बैनर, पोस्टर लेकर नारेबाजी की और डॉग रूल 2023 को लागू करने की मांग उठाई। इस दौरान सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिल्ली-एनसीआर के डॉग्स को शेल्टर में रखने संबंधी आदेश के मायने भी समझाए गए। एनिमल लवर उज्जवल स्वामी ने बताया कि लोगों के हस्ताक्षर महामहिम राष्टपति और चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया को भेजे जाएंगे।

स्वतंत्रता दिवस पर सेंट्रल जेल से 10 कैदी रिहा

इंदौर। सेंट्रल जेल में इस बार स्वतंत्रता दिवस का जश्न खास रहा। यहां से 10 कैदियों को रिहा किया गया, जिनमें एक महिला भी शामिल है। लंबे समय तक कैद की जिंदगी जीने के बाद, अच्छे आचरण और शासन की माफी के चलते इन कैदियों को फिर से खुली हवा में सांस लेने का मौका मिला। रिहा हुए कैदियों में कुछ ने 15 से 20 साल तक जेल में सजा काटी थी। जेल में रहते हुए इन्होंने अपने खाली समय को बेकार नहीं जाने दिया। किसी ने बढ़ईगिरी सीखी, किसी ने हैंडलूम पर काम, कोई खाना बनाने में निपुण हो गया, तो कोई बागवानी का विशेषज्ञ बन गया। जेल प्रशासन ने अनपढ़ बंदियों को शिक्षा भी दी, जिससे कई ने बीए और बीकॉम जैसी डिग्रियां हासिल कीं। जेल अधीक्षक अलका सोनकर ने रिहाई के समय बंदियों को प्रेरणादायक संदेश देते हुए कहा कि वे अपराध से दूर रहें, अपने हुनर को रोज़गार में बदलें और परिवार के साथ सम्मानजनक जीवन जिएं। उन्होंने भरोसा जताया कि यहां सिखाए गए कौशल से ये बंदी समाज में एक नई शुरुआत करेंगे।

रतलाम रेल मंडल में 79 वां स्वतंत्रता दिवस मना

इंदौर। पश्चिम रेलवे रतलाम मंडल में 79वां स्वतंत्रता दिवस उत्साह, सम्मान और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय परिसर में मुख्य समारोह आयोजित हुआ, जहां मंडल रेल प्रबंधक अश्विनी कुमार ने ध्वजारोहण किया। वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त रामराज मीणा के नेतृत्व में रेलवे सुरक्षा बल की परेड का निरीक्षण और सलामी ली गई। मंडल रेल प्रबंधक ने महाप्रबंधक का संदेश पढ़कर सुनाया और मंडल की उपलब्धियां बताईं। उत्कृष्ट कार्य करने वाले 41 कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। सांस्कृतिक टीम ने देशभक्ति गीत प्रस्तुत किए। विशेष अतिथि के रूप में पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्ष डॉ अर्चना शर्मा सहित अधिकारी, कर्मचारी और विभिन्न संगठन प्रतिनिधि मौजूद रहे। अरुणोदय बाल मंदिर में बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत कर अतिथियों का स्वागत किया और उपहार प्राप्त किए। इसके अलावा, मंडल के सभी स्टेशनों, कार्यालयों, कार्यशालाओं और चिकित्सा इकाइयों में भी ध्वजारोहण कार्यक्रम आयोजित हुए।

नियम तोड़ने पर दो वाहन जब्त, पंजीयन पहले ही निरस्त

इंदौर। शहर में यातायात व्यवस्था को सुचारू बनाने और नियम पालन सुनिश्चित करने के लिए यातायात पुलिस लगातार कार्रवाई कर रही है। इसी क्रम में वाहन क्रमांक एमपी 09-यूडब्लयू-7739 और एमपी 09-वीजी-1168 को बार-बार नियम तोड़ने और ई-चालान की राशि अदा न करने पर जब्त किया गया। 1 जुलाई को कलेक्टर की अध्यक्षता में हुई आईटीएमएस बैठक में निर्णय लिया गया था कि 10 से अधिक बार यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले 31 वाहनों का पंजीयन निरस्त किया जाएगा। इन दोनों वाहनों के स्वामियों को 17 जुलाई को आरटीओ द्वारा दस्तावेज और लाइसेंस सहित पेश होने का निर्देश दिया गया था,परंतु वे अनुपस्थित रहे। केंद्रीय मोटर यान अधिनियम 1988 की धारा 55(3) के तहत इनके पंजीयन पहले ही निरस्त कर दिए गए थे। इसके बाद भी नियम उल्लंघन जारी रहने पर यातायात पुलिस ने चौराहों पर निगरानी कर दोनों वाहनों को जब्त कर लिया।

समिति की बैठक में दिए गए निर्देश

इंदौर। राजमोहल्ला स्थित धर्मशाला में आगामी 17 अगस्त को आयोजित होने वाले गोगा नवमी के जुलूस के सम्बंध में शांति समिति और उत्सव समिति के पदाधिकारियों के साथ बैठक की गई। बैठक में सहायक पुलिस आयुक्त हेमंत चौहान ने समिति सदस्यों को जुलूस के सम्बंध में पुलिस व्यवस्था पर जानकारी दी। उन्होंने छड़ी निशान जुलूस के सम्बंध में दिशा निर्देश दिए। छड़ी निशान निकलने वाले भगतों से भी चर्चा कर उनके सुझाव भी लिए। इस अवसर पर सम्पूर्ण वाल्मीकि पंचायतों के पदाधिकारीगण, भगतएवं अन्य समाज जन उपस्थित रहे।

होटल में ठहरे युवक की संदिग्ध परिस्थिति में मौत

इंदौर। अनूपपुर से इंदौर आकर किराए के मकान ढूंढ रहा युवक होटल में ठहरा था। तभी उसकी तबीयत बिगड़ गई। साथी और होटल कर्मी उसे अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां उसकी मौत हो गई। घटना लसूड़िया थाना क्षेत्र में बुधवार रात 2 बजे की है। पुलिस ने बताया कि 24 वर्षीय सुशांत कुमार पिता सनत कुमार दोस्त के साथ कीवी होटल में ठहरा हुआ था। रात करीब 2 बजे उसे कफ आने के साथ ही सांस लेने में दिक्कत होने लगी। दोस्त आर्या और अन्य लोग उसे भंडारी अस्पताल लेकर पहुंचे। यहां डॉक्टरों ने सुशांत को एमवाय अस्पताल ले जाने की सलाह दी। इसके बाद यहीं पर उसकी मौत हो गई। दोस्तों ने बताया कि सुशांत ने इंदौर से पढ़ाई की है। राखी के बाद वह अनूपपुर से इंदौर आया था। वह ब्रोकर का काम भी करता है। इंदौर में रहने के लिए किराए से मकान ढूंढ रहा था। सुशांत के परिवार में दो बहनें और मां हैं, जो अनूपपुर में ही रहती हैं। पिता की काफी समय पहले हार्ट अटैक से मौत हो चुकी है। पुलिस ने सुबह परिजनों को जानकारी दी। उनके इंदौर आने के बाद सुशांत का पोस्टमार्टम कराया जाएगा।

फर्जी दस्तावेज बनाकर ठगी, निवेश का झांसा

इंदौर। पीड़ित युवक के कूटरचित दस्तावेज तैयार कर सवा दो करोड़ रुपए ठगने वाले बदमाश को क्राइम ब्रांच ने दबोच लिया है। बदमाश ने पीड़ित को शेयर मार्केट में निवेश का झांसा दिया था। आरोपी देश के कई राज्यों में इस तरह की वारदात को अंजाम दे चुका है। पीड़ित प्रतिक पिता राजू खंडेलवाल निवासी अल्टामांड मालाड ईस्ट मुम्बई ने बताया कि उसे अनलिस्टेड कंपनी ईएसडीएस के 75000 शेयर बेचने के नाम पर आरोपी अभिषेक पिता अशोक भट्ट निवासी निवासी चिकित्सक नगर ने झांसे में ले लिया। उसकी बातों में आकर मैंने आरोपी के बताए बैंक खाते में दो करोड़, इक्कीस लाख रुपए जमा करा दिए। बाद में आरोपी ने शेयर बेचने से इनकार कर दिया। मामले में पुलिस ने आरोपी पर धारा 318(4), 338, 336(3), 340(2)का केस दर्ज किया था। आरोपीसे अन्य वारदातों को लेकर कड़ाई से पूछताछ की जा रही है।

खारक कारोबारी के यहां डीआरआई का छापा, कई अनियमितताएं मिली

मुंबई में पाक की पकड़ी खारक के कंटेनर का कनेक्शन मिला

इंदौर। मुंबई की डायरेक्टरेट ऑफ रेवेन्यू इंटेलिजेंस (डीआरआई) यूनिट ने सियागंज के बड़े खारक (सूखे खजूर) कारोबारी ओमकार ट्रेडर्स के यहां छापा मारकर इंपोर्ट-एक्सपोर्ट से जुड़ी अनियमितताएं पकड़ी। इस छापेमारी के तार मुंबई में डेढ़ महीने पहले डीआरआई द्वारा पकड़े गए खारक के कंटेनर से जुड़े होने कीआशंका व्यक्त की जा रही है। कंटेनर में पाकिस्तानी खारक थी, जो दुबई के रास्ते भारत भेजी जा रही थी। इस कार्रवाई में 35-40 करोड़ के बोगस बिल बनाए जाने की बात सामने आई। देश में इंदौर खारक की सबसे बड़ी मंडी है। सियागंज में 70 प्रतिशत व्यापार खारक का ही होता है। यहां हर साल 150 से 200 टन खारक खाड़ी देशों के जरिए पहुंचती है। डीआरआई ने 'ऑपरेशन डीप मैनिफेस्ट' के तहत 26 जून को 1115 मीट्रिक टन माल से भरे 39 कंटेनर जब्त किए

थे। इन कंटेनरों में बड़ी मात्रा में सूखे खजूर (खारक) होने की जानकारी मिली थी। दस्तावेजों में इन्हें दुबई (यूएई) से आया बताया गया, लेकिन जांच में माल की असल आवक पाकिस्तान के कराची पोर्ट की निकली। इन कंटेनरों की बाजार कीमत करीब 9 करोड़ रुपए आंकी गई। इन कंटेनरों से जुड़ी कुछ सप्लायर एंट्री इंदौर के व्यापारियों से मेल खा रही है, जो भारत की सबसे बड़ी खारक मंडी सियागंज थोक बाजार से जुड़े हैं।

पाकिस्तान से व्यापार पर प्रतिबंध- पहलगाम आतंकवादी हमलों के बाद, भारत सरकार ने 2 मई, 2025 से पाकिस्तान से आने या निर्यात होने वाले माल के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष आयात या पारगमन पर व्यापक प्रतिबंध लगा दिया था। हालांकि, भारत में पाकिस्तान से आयात पर कड़े प्रतिबंध के बावजूद, कुछ आयातक माल के मूल स्थान की गलत जानकारी देकर और संबंधित शिपिंग दस्तावेजों में हेराफेरी करके सरकारी नीति को दरकिनार करने का प्रयास करते हैं। जांच से पता चला कि खारक को पहले पाकिस्तान से दुबई एक कंटेनर और जहाज़ के सेट पर ले जाया गया और बाद में भारत जाने वाले दूसरे कंटेनर और जहाज़ के सेट पर स्थानांतरित कर दिया गया था।

दो सिर वाली बच्ची जन्मी, शरीर एक, लेकिन सिर और दिल दो

अस्पताल में उसका इलाज चल रहा, जन्म से पहले पुष्टि

इंदौर। शहर में एक बार फिर दो सिर वाली बच्ची ने जन्म लिया। पिछले महीने भी ऐसी ही बच्ची का जन्म हुआ था, लेकिन 16 दिन बाद उसकी मौत हो गई। इस बार जन्मी बच्ची का शरीर एक है, लेकिन सिर और दिल दो हैं। फिलहाल उसके सभी अंग सामान्य रूप से काम कर रहे हैं और उसे डॉक्टरों की कड़ी निगरानी में रखा गया है। खरगोन के मोथापुरा गांव निवासी सोनाली पति आशाराम को 13 अगस्त को एमटीएच अस्पताल में डिलीवरी के लिए लाया गया था। सोनोग्राफी और अन्य जांच में गर्भ में दो सिर वाले शिशु की पुष्टि हुई, जिसके बाद उसे एमवाय अस्पताल रेफर किया गया। जटिल सर्जरी के बाद सोनाली ने पहली संतान के रूप में

इस बच्ची को जन्म दिया। बच्ची का वजन कम है और उसके दोनों सिर गर्दन से जुड़े हुए हैं। भविष्य में सर्जरी द्वारा उन्हें अलग करना संभव नहीं है।

कुछ दिन पहले भी इंदौर में रुसा पति वीर सिंह भिलाला ने 2.82 किलो वजन की दो सिर वाली बच्ची को जन्म दिया था, जो 16 दिन तक जीवित रही। उसका एक दिल कमजोर होने के कारण उसकी मृत्यु हो गई। डॉक्टरों के अनुसार, यह स्थिति तब होती है जब निषेचन के बाद बनने वाला भ्रूण पूरी तरह अलग होने के बजाय शुरुआती अवस्था में जुड़ा रह जाता है।

लंबे अरसे बाद इंदौर में झमाझम बारिश का दौर, कोटा पूरा होने की उम्मीद बंधी

मौसम विभाग का अलर्ट इंदौर-उज्जैन में बारिश, ऐसा रहेगा ही मौसम

इंदौर। इंदौर और आसपास के जिलों में बारिश ने धूमधड़ाके के साथ वापसी की है। बुधवार-गुरुवार की देर रात से शुरू हुई बारिश रुक रूककर जारी है। गुरुवार को शहर में ज्यादा बारिश नहीं हुई, पर शुक्रवार को सुबह से ही लगातार तेज बारिश जारी है। इस बार मालवा में अब तक औसत से कम बारिश ही दर्ज की गई। अब मानसून की वापसी में यहां भी झमाझम बरसात का दौर शुरू हो गया। उम्मीद की जा रही है कि औसतन 40 इंच बारिश का कोटा पूरा हो जाएगा। मौसम विज्ञानियों के मुताबिक वर्तमान में एक चक्रवाती हवाओं का घेरा कच्छ के पास बना है। वहां से एक द्रोणिका बंगाल की खाड़ी तक जा रही है। इसके प्रभाव से इंदौर में 14 से 16 अगस्त तक भारी वर्षा का अलर्ट था। 15 अगस्त को भी पश्चिम मध्य प्रदेश के कई जिलों में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया गया था, जो सही निकला। मालवा के लोगों के लिए खुशखबरी की बात यह कि इंदौर, उज्जैन, देवास और पश्चिमी और पूर्वी निमाड़ के जिलों में भी शुक्रवार और उसके बाद भी भारी बारिश का अलर्ट जारी हुआ। बुरहानपुर, खंडवा और बड़वानी में भी

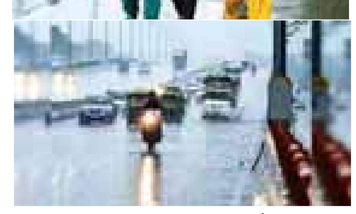

शुक्रवार सुबह से बारिश का दौर शुरू हो गया था। मौसम विभाग ने आने वाले 24 घंटे तक मालवा के सभी जिलों में बारिश होने की चेतावनी जारी की है। मालवा अंचल में मानसून एक्टिव हो गया है, बंगाल की खाड़ी से सक्रिय हुआ सिस्टम इन जिलों में जमकर बारिश बरसाएगा. ऐसे में मालवा के सभी जिलों में झमाझम बारिश होने की संभावना बन रही है। इंदौर और आस-पास के जिलों में गुरुवार तड़के से ही तेज बारिश हो रही है। तेज बारिश से सड़कों पर पानी भर गया, वहीं मौसम में ठंडक घुलने से लोगों को राहत मिली। शहर में बुधवार को दिनभर बादल छाए रहे और राजवाड़ा, खंडवा रोड सहित शहर कुछ हिस्सों में रिमझिम बूंदाबांदी जारी रही।

नकली पुलिसवाला राजा रघुवंशी के घर पहुंचा, शक होने पर पुलिस के हवाले

परिवार की सजगता से वारदात नहीं की, उसकी बातों से शक हुआ

इंदौर। जिस ट्रांसपोर्ट कारोबारी की शिलांग में हनीमून के दौरान उसकी की पत्नी ने हत्या करवा दी थी। गुरुवार शाम 5 से 6 बजे के बीच उनके घर पर एक नकली पुलिसवाला पहुंच गया। पर, परिवार की सजगता से वो कोई वारदात नहीं कर सका। थ्री स्टार वर्दी वाले ठग ने राजा की मां के पैर छूकर खुद को उनके बेटे का दोस्त बताया। शक होने पर राजा के भाईयों ने पहचान पत्र मांगा, जो नकली निकला। बाद में पुलिस ने उसे धर दबौचा तो उसने कबूल किया कि वो ठगी की नीयत से आया था। राजा के परिवार को ठगने के इरादे से एक शख्स खाकी वर्दी पहनकर उनके घर पहुंच गया। कंधे पर थ्री स्टार लगाए नकली टीआई घर में घुसते ही राजा की मां के पैर छूए। फिर खुद को परिवार का करीबी बताया। इसके बाद वह राजा के पिता से पूछताछ करता रहा। मामला राजेंद्र नगर थाना क्षेत्र का है। उमा रघुवंशी ने फोन पर अपने बेटे विपिन को बताया कि घर पर एक पुलिस वाला आया है। वह राजा के पिता से बातचीत

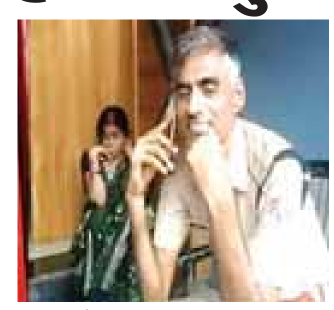

कर रहा है। मां ने बताया कि वह वर्दी में है और कंधे पर तीन स्टार लगे हैं। इस पर विपिन को संदेह हुआ। उन्होंने जब नाम और पहचान पूछा तो बताया पिताजी बात कर रहे हैं। यह सुन विपिन अपने भाई सचिन के साथ तुरंत घर पहुंचा।

रेलवे में होने की बात भी झूठी- घर पहुंचने पर विपिन और सचिन ने नकली वर्दीधारी बात की। उसने खुद को बजरंग लाल जाट, निवासी रतनगढ़ (राजस्थान) बताया। उसने कहा कि वह रेलवे में कार्यरत है और उज्जैन में उसकी पोस्टिंग है। साथ ही उसने दावा किया कि कहा कि वह राजा रघुवंशी का मित्र है। राजा से उसकी मुलाकात 2021 में महाकाल मंदिर में हुई थी। विपिन ने इस पर सवाल किया कि 2021 में तो कोरोना लॉकडाउन था। उस समय राजा कहीं बाहर नहीं जाता था। शक गहराने पर विपिन ने पहचान पत्र मांगा। आरोपी ने टालमटोल करते हुए एक आईडी दिखाई, जिसे क्राइम ब्रांच को भेजा गया। जांच में पुष्टि हुई कि आईडी नकली है।

दुख बांटने का बहाना किया - पूछताछ हुई तो उसने कहा कि वह राजा की मौत का दुख साझा करने आया है। बहानेबाजी और गोलमोल जवाबों से मामला और संदिग्ध हो गया। इसके बाद विपिन ने राजेंद्र नगर पुलिस को सूचना दी। पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची और आरोपी को हिरासत में लेकर थाने ले गई। राजेंद्र नगर थाना प्रभारी नीरज बिरथरे ने बताया कि सख्ती से पूछताछ करने पर आरोपी ने स्वीकार किया कि वह न तो पुलिसकर्मी है और न रेलवे कर्मचारी। उसने कबूल किया कि सोशल मीडिया पर राजा की मौत की खबर देखकर वह परिवार को ठगने के इरादे से आया था। जांच में यह भी सामने आया कि बजरंग लाल पहले भी नकली पुलिसकर्मी बनकर वारदात कर चुका है। पुलिस अब उसके आपराधिक रिकॉर्ड की जांच कर रही है, ताकि पता किया जा सके कि उसने कितनी वारदात की है।

झंडा वंदन और धार्मिक आयोजन से सरकारी भूमि पर कब्जे की कोशिश

अवैध खनन, तालाब को बंद किया, अब वहां अवैध कॉलोनी

इंदौर। रंगवासा क्षेत्र की 300 करोड़ों की शासकीय भूमि पर भू-माफिया अपने कब्जे को सही साबित करने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने स्वतंत्रता दिवस पर इस शासकीय जमीन पर झंडा वंदन भी किया। साथ ही यहां 13 से 19 अगस्त तक एक कंटेनर रखकर धार्मिक अनुष्ठान भी किया जा रहा है। इन सारी गतिविधियों का मकसद सरकारी जमीन पर अपने कब्जे को सही साबित करना है। राजस्व रिकॉर्ड में सरकारी दर्ज इन भूखंडों को कब्जाने के लिए माफिया कई तरीके अपना रहे हैं। कहीं नकली दस्तावेज बनाकर प्लॉटिंग, तो कहीं धार्मिक या सामाजिक आयोजन के नाम पर स्थायी ढांचा खड़ा करने की कोशिश हो रही है। ग्राम वासियों का कहना है कि मुख्य आरोपी भू-माफिया राहुल तंवर की लंबे समय से शिकायतें हो रही हैं, लेकिन ठोस कार्रवाई न होने से उसकी हिम्मत बढ़ रही है।13 से 19 अगस्त तक इसी भूमि पर एक कंटेनर

रखकर धार्मिक अनुष्ठान किया जा रहा है, जिसके लिए बाकायदा कार्ड भी बांटे गए। ग्रामीणों ने मांग की है कि प्रशासन तत्काल कार्रवाई कर सरकारी भूमि को भूमाफिया के कब्जे से मुक्त कराए, वरना यह हमेशा के लिए निजी हाथों में चली जाएगी। आरोप है कि राहुल तंवर ने पट्टे की जमीन पर पहाड़ काटकर अवैध खनन कराया, तालाब पाट दिया और करीब 10 करोड़ रुपए का राजस्व नुकसान किया। पूर्व तहसीलदार और खनिज विभाग को शिकायत देने के बावजूद दो साल से कोई कार्रवाई नहीं हुई। हाल ही में अपर कलेक्टर गौरव बेनल ने 16 अवैध कॉलोनियों पर कार्रवाई की। जबकि, कुछ दिन पहले कलेक्टर आशीष सिंह ने राऊ तहसील की रंगवासा की 300 करोड़ की भूमि को माफियाओं से बचाया था।

नायब तहसीलदार अशोक परमार ने रंगवासा की शासकीय भूमि पर अवैध नामांतरण आवेदन निरस्त कर प्रतिवेदन भेजा। लेकिन, कॉलोनी को अब तक अवैध घोषित नहीं किया गया। जानकारी के अनुसार लगभग 75 बीघा जमीन पर बाउंड्री वॉल, पौधारोपण और प्लॉटिंग हो चुकी है। यह भूमि 1925 से 1979 तक शासकीय रिकॉर्ड में रही, लेकिन अधिकारियों-कर्मचारियों की मिलीभगत से 'श्री गणेश सामूहिक कृषि संस्था' के नाम दर्ज कर फर्जी बंटवारा किया गया। 2003 में तत्कालीन तहसीलदार ने अधिकार क्षेत्र से बाहर जाकर बंटवारा व्यक्तिगत खातों में करवा दिया। संभाग आयुक्त दीपक सिंह ने भूमि को शासकीय घोषित किया था, इसके बावजूद जमीन पर कब्जा और प्लॉटों की बिक्री जारी रही।

पति को किसी महिला से वीडियो कॉल पर देखा तो आपत्ति ली, पति ने पीटा

घायल महिला अस्पताल में भर्ती, एफआईआर दर्ज, पति फरार

इंदौर। भंवरकुआं थाना क्षेत्र की एक महिला ने अपने पति के खिलाफ मारपीट का मामला दर्ज कराया। पति की मारपीट के बाद यह महिला एक निजी अस्पताल में भर्ती है, उसका इलाज जारी है। महिला का आरोप है कि जब वह ड्यूटी के बाद घर लौटी, तो पति को किसी अन्य महिला से वीडियो कॉल पर बात करते देखा। इस पर आपत्ति

जताने पर दोनों के बीच विवाद हुआ, जिसके बाद पति ने उसके साथ मारपीट की।ॉ पुलिस ने पीड़िता शोभा आहूजा की शिकायत पर आरोपी मयंक आहूजा के खिलाफ केस दर्ज किया। पुलिस ने अस्पताल में जाकर पीड़िता के बयान दर्ज किए। शोभा ने बताया कि वह एक निजी अस्पताल में काम करती है। गुरुवार शाम जब वह काम से लौटकर घर पहुंची, तो देखा कि उसका पति मयंक किसी महिला मित्र से वीडियो कॉल पर बात कर रहा था। आपत्ति जताने पर कहासुनी हो गई, जिसके बाद मयंक ने पहले उस पर टेडी बियर फेंका और फिर विरोध करने पर बेरहमी से पीटते हुए उसका सिर दीवार में दे मारा। हमले में शोभा को सिर में गंभीर चोटें आईं। शोभा ने तुरंत अपनी दोस्त कोमल को फोन किया, जो उसे अस्पताल लेकर गईं। अस्पताल से पुलिस को सूचना दी गई, जिसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची और मामला दर्ज किया गया। फिलहाल मयंक फरार है और उसकी तलाश जारी है। भंवरकुआं थाना प्रभारी ने बताया कि पीड़िता के बयान और मेडिकल रिपोर्ट के आधार पर आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर लिया गया है। जल्द ही उसे गिरफ्तार कर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

युवक राखी मनाकर आया, फांसी लगाई, सुसाइड़ नोट नहीं मिला

युवती ने आत्महत्या की, मोबाइल में कुछ मैसेज डीलिट मिले

इंदौर। गांव से राखी मनाकर युवक घर लौटा और अपने कमरे में जाकर फांसी लगा ली। मकान मालिक ने फोन किया तो उसने नहीं उठाया। इसके बाद पुलिस को सूचना दी गई। एक अन्य घटना में एक युवती ने भी आत्महत्या की है। दोनों ही मामलों में कोई सुसाइड नोट नहीं मिला। आजाद नगर थाना क्षेत्र के अनुसार, मृतक विराट नगर निवासी रंजीत (25) पिता छोटेलाल अहिरवार है। वह मूलतः ग्राम परसून जिला सागर का रहने वाला है। बुधवार शाम को वह घर आया था। रात करीब 10 बजे मकान मालिक ने छोटेलाल को कॉल किया। वह कमरे पर पहुंचे तो रंजीत फंदे पर लटका हुआ था। रंजीत अपने पिता से अलग रहता था और प्लाई कंपनी में काम करता था। उसका एक बेटा और पत्नी है, जो राखी मनाने अपने गांव गए हुए थे। पुलिस को मौके से किसी तरह का सुसाइड नोट नहीं मिला है।

घर पर अकेली युवती- इसी प्रकार, आजाद नगर में रहने वाली निजी कंपनी में कार्यरत युवती वर्षा बघेल (22 वर्ष) ने सुसाइड कर लिया। वह बुधवार को घर पर अकेली थी। उसके माता-पिता भी काम पर गए हुए थे। वह भाई भी ड्यूटी पर था। शाम को पिता घर आए तो घटना की जानकारी लगी। परिवार के मुताबिक उसके मोबाइल से कुछ मैसेज डिलीट मिले हैं। संभवत वह आखिरी समय पर किसी से चैटिंग कर रही थी। मृतका का नाम वर्षा (22) पिता रूप बघेल निवासी आलोक नगर मूसाखेड़ी है।

इंदौर के 6 युवकों की सड़क हादसे में मौत, जगन्नाथपुरी जाते समय हादसा

चिरहारी चौराहे के पास तेज रफ्तार ट्रक और कार में टक्कर

इंदौर। छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले के बागनदी थाना क्षेत्र के अंतर्गत चिरचारी नेशनल हाईवे चौराहे के पास एक भीषण सड़क हादसे में इंदौर के 6 युवकों की मौत हो गई। हादसे में कार चालक गंभीर रूप से घायल हुआ, जिसे इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। चिरचारी चौराहे के पास सुबह एक भीषण सड़क हादसा हुआ। कार और ट्रक की टक्कर में इंदौर के रहने वाले 6 दोस्तों की मौके पर मौत हो गई। जबकि, चालक गंभीर रूप से घायल है। ये सभी ओडिशा के जगन्नाथपुरी घूमने

जा रहे थे। हादसे के बाद पुलिस जांच जारी है। जानकारी के अनुसार, यह हादसा उस समय हुआ जब कार सवार सभी 7 युवक नागपुर से राजनांदगांव की ओर जा रहे थे। चिरहारी नेशनल हाईवे चौराहे के पास तेज रफ्तार ट्रक और कार के बीच भीषण टक्कर हो गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि कार के परखच्चे उड़ गए और उसमें सवार 6 युवकों की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं, घायल चालक की हालत नाजुक बताई जा रही है। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शवों को कार से बाहर निकालकर पोस्टमार्टम के लिये भेजा है। हादसे की खबर से मृतकों के परिजनों में कोहराम मच गया है।

पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। मृतक आकाश मौर्य (28), गोविंद (33), अमन राठौर (26), नितिन यादव (34), संग्राम केसरी और एक अन्य की मौके या अस्पताल में मौत हो गई। घायल चालक सागर यादव को गंभीर हालत में मेडिकल कॉलेज अस्पताल भेजा गया है।

लघुकथा

चोर

एड. रमाकान्त चौधरी

गाँव में अचानक हल्ला मच गया –चोर! चोर! चोर! चोर! गाँव वालों ने चारों तरफ से घेरकर, घर में घुसे चारों चोर पकड़ लिए। तुरंत पुलिस को बुला लिया गया। पुलिस ने चोरों को देखा और गाँव वालों से कहा – हम कार्रवाई तभी करेंगे, जब आप लिखित शपथपत्र देंगे कि ये सचमुच चोर हैं। गाँव वाले कागज़–कलम लाने दौड़े। तब तक पुलिस की गाड़ी सर्र से निकली, और चारों चोर सीट पर आराम से बैठे। क़ानून के संरक्षण में, सुरक्षित चले गए।

वक्रोक्ति

विश्वास व्यास

लेखक व्यंग्यकार हैं।

बंदों से पर्दा करना क्या?

आजकल लोग सोशल मीडिया पर निजता का हवाला दे रहे हैं–नोटिस टाइप कि मेरी जानकारी, फोटो इधर-उधर मत करना। सवाल ये है–निजता है कहां, गुरु? आप तो पैदा होने से पहले ही खबर बन चुके थे। रिश्तेदारों, परिचितों, पड़ोसियों को पहले से पता था कि आप आने वाले हैं। बस तब से आपकी लाइफ का लाइव कवरेज जारी है।

बचपन से आपकी प्रतिभा का सार्वजनिक प्रदर्शन चलता आ रहा है–कभी गाकर, कभी नाचकर–या घरवालों के जरिए। हर परिवार में एक शख्स होता है जो आपके अच्छे-बुरे की खबर तटस्थ भाव से प्रसारित करता है, ताकि सबको पता रहे कि आजकल कत्ल कर रहे हैं या करामात।

हर आदमी का एक खास दोस्त होता है। जो उसका हर राज जानता है और उसे सबको बताना अपनी जिम्मेदारी समझता है। कुछ लोग खुद भी अपने दिल के ज़ख्मों की एकल प्रदर्शनी लगाए फिरते है। यानी आपके बारे में पब्लिक पहले से सब जानती है। ऐसे में सोशल मीडिया पर शक करना गलत है।

मोहल्ले में भी कुछ लोग निस्वार्थ भाव से इसी सेवा में लगे रहते हैं। सीसीटीवी तो नया आया है, 'गुप्त नज़र' का कॉन्सेप्ट सदियों पुराना है। किसका लड़का रात को 'पी' कर आया, कौन सी लड़की किसके साथ बाइक पर बैठी दिखी–ये सब गुप्त बातें गुप्त तरीक़े से सबको मालूम होती हैं। 'किसी को बताना मत' वाली चेतावनी के बावजूद। ये और कुछ नहीं, सिर्फ़ सामाजिक चिंता है। आखिर हम वसुधैव कुटुम्बकम् मानने वाले लोग हैं। हमारी जिंदगी खुली किताब है–हर पन्ना सबके लिए खुला–और आपकी निजता इस ओपन बुक एग्जाम का सिलेबस।

हमारे मोहल्ले में एक साहब आठ दिन से काम पर नहीं जा रहे। पान की दुकान से लेकर पड़ोसी के आँगन तक चर्चा गर्म है। निजता विशेषज्ञ मीटिंग कर चुके हैं, शेयर मार्केट के शौकीन कयास लगा रहे हैं–'क्या नौकरी फिर छूट गई?' इसमें निजता का सवाल कहां है? ये तो विशुद्ध चिंता है।

सोशल मीडिया से ज्यादा तो कामवाली दीदी को आपकी जानकारी है–आपके देर से उठने से लेकर भाभी से बातचीत बंद होने तक का बुलेटिन समय पर जारी होता है। इतना बढ़िया कवरेज तो बड़ी क्क्र एजेंसी भी नहीं करवा सकती। ऐसे में सोशल मीडिया आपकी निजता का क्या बिगाड़ लेगा? जो चीज़ आपके पास ही नहीं, उसे खोने का डर कैसा?

असल में आपको खुश होना चाहिए कि दुनिया आपको जान रही है। पापा कहते थे–बड़ा नाम करेगा! अब हो रहा है तो ÷मेरा नाम मत लेना÷ का नोटिस क्यों? हमारे बाप-दादा तो निजता मोहल्ले और रिश्तेदारों में ही खपा देते थे। हम तो ग्लोबल हो गए हैं–आपकी जानकारी में दुनिया की दिलचस्पी है। इससे ज्यादा शोहरत क्या होगी?

बेफिक्री से पोस्ट लिखिए, फोटो डालिए, हजारों को टैग कीजिए। सप्लाई ज्यादा होगी तो डिमांड घट जाएगी–पुराना आजमाया नुस्खा। इतने सार्वजनिक हो जाइए कि प्राइवेसी नाम की चिड़िया बचे ही न–न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी!

और सोचिए–आप सोशल मीडिया पर हैं ही क्यों? ताकि लोग जानें कि आप कौन हैं, क्या कमाल कर रहे हैं और क्या बवाल करने वाले हैं। जन्म, मरण, परण–सब आपने ही पोस्ट किया है। जब नई कार का फोटो 'फीलिंग हैप्पी' टैग के साथ डालते हैं, तो लोग पूछेंगे ही–'ये बेकार कार कहां से लाया?' इसमें बुरा मानने वाली कोई बात नहीं है। सोशल मीडिया के बाजार में एक बार सज गए तो फिर वही होगा जो विंडो शॉपिंग में होता है–लोग देखेंगे, उलट-पलट करेंगे, पूछेंगे और निकल लेंगे।

आपकी निजता तो दीवार–यानि आपकी वाल–पर लिखी इबारत है। जो सदियों तक कायम रहेगी। आपके डिजिटल फुटप्रिंट्स यानी कदमों के निशान हमेशा बने रहेंगे। राहत साहब कह ही गए हैं–

अब बाज़ार में रखे हो तो हैरत क्या है,
जो भी देखेगा, वो पूछेगा कि कीमत क्या है।

इसीलिए निजता की चिंता छोड़िए और पोस्ट करने के सुख से जीते रहिए। याद रखिए–कोई आपके कर्म देखे न देखे, ईश्वर देख रहा है। जब खुदा से पर्दा नहीं, तो बंदों से पर्दा क्या? ये बात नई रील बनाने वाली बालाएं समझ चुकी हैं, और आप हैं कि निजता का रोना रो रहे हैं। उधर लोग वायरल हो रहे हैं, इधर आपको निजता का वायरल बुखार है। आप तो केवल पोस्ट करने का कर्म कीजिए, फल की चिंता छोड़िए। उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक वायरल न हो जाओ। यही आज का विवेक है–और इसी में सबका आनंद।

लघुकथा

पंख जो होते

सुरेश सौरभ

पहला मोर-कृष्ण जन्माष्टमी की बधाई। दूसरा मोर-काहे की बधाई अपने पंख नुचवाने की। पहला-हां। दूसरा- काहे जले पर लोन लगा रहा है, देख नहीं रहा, जगह-जगह झांकियों में इतने हमारे पंख लगे हैं, जितने भगवान ने भी कभी सोचा न होगा। यह पंख हमें नोंच-नोंच कर ही आ रहे हैं, हमारी घोर दर्द-पीड़ा की दास्तां पर, बधाई देते तुझे लाज नहीं आती। पहला-अब रोने-कलपने से क्या फायदा? जब नुचा ही डाले अपने पर? अब क्या दर्द जाएगा? ... बधाई देते-लेते शायद अपना दर्द कुछ जाता रहे। दूसरा, लंबी निःश्वास छोड़ते हुए-सही कहा है किसी ने, दिल को बहलाने के लिए गालिब ख्याल अच्छा है। अब दोनों मोर एक-दूसरे को कातर दृष्टि से ताकते हुए मूक भाषा में सान्त्वना दे रहे थे। दो दुर्बल, असहाय जीवों का दुःख रिसता हुआ प्रकृति की कोर-कोर में उदासी भरने लगा।

कविता

शाश्वत

अनुपमा अनुश्री

रुपहले, सुनहरे धागों से
लकदक दमकता
वह दौर था जहाँ
भावनाएँ
महका करती थी,
झूठे शब्दजाल से
मुक्त होकर,
कितने ही जज़्बात
पिघला करते थे
बस एक मुस्कान
को छूकर,
अधूरी इबारतों में,
कच्ची-पक्की
इमारतों में
अभी भी,
कुछ नाम गूँजा करते हैं
मंदिर की घंटियों,
इबादतों में
धड़का करते हैं!
जिसे दीवारों,
मीनारों ने सुना होगा,
फ़लक पर सजाई
भी होगी
कोई पालकी
चाँद- तारों ने,
इस पाक़ीज़गी
को समेट
कुदरत ने भी
क़िस्सा बुना होगा
कि पग हवाओं पर
और मन
गगन पर
अटका होगा
कि जिस मासूमियत
और नज़ाकत से
लम्हों पर हस्ताक्षर
कर दिये,
एक साथ अनुबंधित
आत्माओं ने।
नैनों से अव्यक्त
झर गया
अभिव्यक्त होकर,
इस संवाद को पढ़ते रहे
ज़मीं -आसमां ठहरकर,
पुनर्पाठ करना चाहते हैं
बार-बार, हर बार।

भावनाओं की डोर

कहानी

सुनील कुमार महला

उत्तराखंड के एक छोटे से पहाड़ी गांव की लड़की कृतिका भले ही एक सामान्य ग्रामीण जीवन जीती थी, पर उसकी सोच असाधारण थी। उसके पिता कैप्टन पीयूष भारतीय सेना से रिटायर्ड थे, जिनके किस्से-कहानियों, बातों से कृतिका का मन और आत्मा देशभक्ति से बचपन से ही ओतप्रोत हो गया था। हर तीज-त्योहार उसके लिए सिर्फ एक परंपरा नहीं, बल्कि देश की सरहद के रक्षकों को याद करने का अवसर भी होता। इस बार सावन पूर्णिमा का पवित्र त्योहार राखी नजदीक आ चुका था। गांव के नजदीक ही एक पहाड़ी पर सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) की एक यूनिट अस्थाई तौर पर तैनात थी। वहां लगभग पचास जवान तैनात थे, जो पिछले दो-तीन सालों से राखी के त्योहार पर अपने घर परिवार से मिलने नहीं जा पाए थे। चूंकि, स्वयं कृतिका के पिताजी सेना से रिटायर्ड कैप्टन थे और उसने घर-परिवार में रहते हुए अक्सर यह महसूस किया था कि उसके पिताजी अनेक बार त्योहार के अवसर पर उनसे मिलने घर पर नहीं आ पाते थे। कृतिका को पता चला कि एसएसबी के जवान भी आपदा प्रबंधन ड्यूटियों के कारण राखी के अवसर पर अपने घर नहीं जा पाए होंगे। यह बात उसके अंतर्मन को छू गई और उसने ठान लिया कि इस बार वह इन वीर जवानों के लिए ऐसा कुछ करेगी जो उनके दिल को छू जाए। राखी से दो दिन पहले, कृतिका ने गांव की अन्य लड़कियों और महिलाओं से मिलकर 'रक्षाबंधन सेवा अभियान' शुरू किया। सभी ने मिलकर राखियां बनाई, मिठाइयाँ पकाई, कुछ ने तो अपने बच्चों की तस्वीरों और चिट्ठियों के साथ राखियां भेजीं–मानो अपने ही सगे भाइयों के लिए।

जिस दिन का इंतजार कृतिका व उसकी सभी सहेलियां कर रही थी, आज वह दिन आ गया था। कृतिका उस दिन बहुत ही खुश व प्रसन्न नजर आ रही थी। रक्षाबंधन के दिन सुबह-सुबह, कृतिका अपने हाथों में फूलों, रंगीन मोतियों तथा गोटा-पट्टी से सजा थाल लिए रोली, मौली, अक्षत-चावल, चंदन, हल्दी, नारियल, दीपक, और खील-बताशों से भरपूर, साड़ी में सजी-संवरी, अपने व सहेलियों के हाथ से बनीं दर्जनों राखियां, मां के हाथ से बने लड्डुओं के डिब्बे और कुछ सहेलियों को लेकर कैंप पहुंची। पहले तो सुरक्षा कारणों से उन्हें रोका गया, लेकिन जब उन्होंने अपना उद्देश्य बताया और जवानों के लिए लाए गए राखी के उपहार दिखाये, तो कमांडिंग ऑफिसर (सीओ) की आंखें भी भीग गईं। कृतिका और उसकी सहेलियों ने एक-एक जवान की कलाई पर राखी बांधी, उनको अक्षत-चावल रौली-चंदन से तिलक किया, आरती उतारी और मिठाई खिलाई। हर राखी के साथ जैसे वे सब मन ही मन यही गा रही थी–'बहना ने भाई की कलाई से प्यार बांधा है, प्यार के दो तार से संसार बांधा है, रेशम की डोरी से संसार बांधा है...' वह हर जवान के राखी बांधती और कहती-आप सिर्फ देश के रक्षक ही नहीं, हमारे भी भाई हैं। आज आपकी सगी बहनें भले ही आपसे दूर घर पर हैं, लेकिन हम हैं न! सभी जवान आज बहुत प्रसन्नचित्त नजर आ रहे थे और बच्चों की तरह मुस्कुरा रहे थे। किसी ने कहा, बहना, आज पूरे चार साल बाद राखी बंधवाई है, मां कसम दिल भर आया। दूसरे ने चुपचाप अपनी आंखें पोंछते हुए यह कहा, आज घर की बहुत याद आ रही थीज्लेकिन अब नहीं। कमांडिंग ऑफिसर भी तब तक आ गये थे, उन्होंने भी कृतिका से राखी बंधवाई, मिठाई खाई। जवानों और कमांडिंग ऑफिसर ने सभी बहनों को ढ़ेर सारे उपहार और रूपए भी भेंट किए। बहनों के स्वागत के लिए साउंड सिस्टम और एक छोटा टैंट/शामियाना भी लगाया गया था, रिफ्रेशमेंट की व्यवस्था भी वहां थीं। सच में उस दिन वह कैंप, एक रक्षा चौकी से बदलकर एक बड़ा सा परिवार बन गया था।

कमांडिंग ऑफिसर ने कृतिका से कहा, आपने आज हमें भाई से ज्यादा इंसान बना दिया। बहुत लोग सीमा प्रहरियों की तारीफ तो बहुत करते हैं, पर आज वह दिन आया है जब, हमें किसी ने दिल से अपना माना है। शाम को जब कृतिका व उसकी अन्य सहेलियां जब घर लौटी, तो उनके हाथों में खाली थाल थे, लेकिन उनके दिल गर्व, खुशी और आत्मसंतोष से भरे थे। कृतिका की मां ने देखा तो वह मुस्कुरा कर बोलीं, आज तूने देश की असली रक्षा की है बेटी। कृतिका के पिताजी अपने सेवाकाल को याद कर रहे थे और उनकी आंखों में भी आज खुशी के आंसू छलक पड़े थे, उन्हें अपनी बेटी कृतिका पर गर्व महसूस हो रहा था, वे स्वयं को धन्य महसूस कर रहे थे। कृतिका ने आज साबित कर दिया था कि बहनें सिर्फ राखी नहीं बांधतीं, वे भावनाओं की डोर से देश के वीरों को भी जोड़ सकती हैं।

स्वतंत्रता संरक्षण का सिद्धांत

व्यंग्य

विनोद कुमार विक्की

लेखक व्यंग्यकार हैं।

हमारे देश में ऊर्जा संरक्षण सिद्धांत की तर्ज़ पर स्वतंत्रता संरक्षण का सिद्धांत देखने को मिल रहा है। ऊर्जा की ना तो उत्पत्ति होती है और न विनाश, वह एक रूप से दूसरे रूप में रूपांतरित होता है। कुछ इसी तरह वर्तमान में आजादी का रूपांतरण भी अदृश्य बंधन अथवा मानसिक गुलामी के रूप में देखने को मिल रही है।

स्वाधीनता, स्वतंत्रता, आजादी, मुक्ति, फ्रीडम आदि ऐसे शब्द हैं जो मनुष्य को छोड़ सभी विवेकहीन जीवों को प्रिय लगती है। ऐसा इसलिए कि मनुष्य पृथ्वी का एकमात्र जीवित विवेक शील प्राणी है, जिसे यह पता होता है कि मनुष्य अकेला जन्म लेता है लेकिन हमेशा बंधनों में बंधा रहता है। यह और बात है कि समय के साथ बंधन का स्थान अदृश्य गुलामी ने लिया है। मनुष्य को भलि भांति ज्ञात होता है कि बंधन में रहकर ही सर्वस्व हासिल किया जा सकता है ना कि उससे आज़ाद या मुक्त होकर। इसलिए हम भारतीय आजादी की इच्छा और आकांक्षा से परे होते हैं।

हम भारतीय प्रयोग धर्मी होते हैं। चुनावी काल के दौरान अपने जात-धर्म और क्षेत्र के उम्मीदवार को वोट देकर संवैधानिक स्वतंत्रता के साथ-साथ जातिगत बंधन स्वरूप अदृश्य गुलामी की परंपरा का निर्वाह करने में पारंगत होते हैं। बेरोजगारी की गुलामी से मुक्त होने के लिए व्यक्ति नौकरी हासिल करता है फिर वेतन, प्रमोशन आदि प्राप्त करने एवं उसी नौकरी को बचाने के लिए जीवन पर्यन्त वरीय पदाधिकारियों की अदृश्य गुलामी में तन्मयता से लग जाता है।

नेताजी पहली बार समाज को भेद-भाव एवं ग़रीबी से मुक्ति दिलाने के लिए चुनाव जीतता है उसके बाद कुर्सी के मोह बंधन में बंध कर पार्टी प्रमुख की अदृश्य गुलामी में तल्लीन हो जाता है। सस्ती लोकप्रियता हासिल करने वाले इंफ्लुएंसर फूहड़ रील बनाने के दौरान दैहिक और भाषाई आजादी का भरपूर उपयोग, प्रयोग और प्रदर्शन करते हैं, हालांकि ऐसी आजादी भी शेयर, लाईक और सब्सक्रिप्शन के मोह बन्धन के अधीन होता है।

यह कड़वा सच है कि संपूर्ण आजादी से मानव वह सब हासिल नहीं कर पाता, जिसे प्रच्छन्न गुलामी से प्राप्त किया जा सकता है। उदाहरण स्वरुप धर्म के बंधन में बंध कर ही मोक्ष अथवा 72 हूर का मनोरथ सिद्ध हो सकता है, ना कि धर्म के बंधन से मुक्त रहकर! इसी तरह राजनीतिक पार्टी के बंधन से बंधे रहने के बाद ही उम्मीदवार चुनावी टिकट प्राप्त कर पाता है। बड़े साहब की जी-हुजूरी और चापलूसी के बंधन से बंधा कर्मचारी ही साहब की असीम अनुकंपा एवं नौकरी का राजसी सुख प्राप्त कर पाता है। राज्य या केंद्र स्तरीय उच्च पद की फिराक में विभागीय बंधन से बंधे साहब भी माननीय को खुश करने की जुगत में लगे रहते हैं।

कहने का आशय है, बंधनों में बंधा हुआ इंसान शत-प्रतिशत आजाद अथवा स्वतंत्र नहीं है। तथापि हमारे देश के कुछ आदमजात विशुद्ध स्वतंत्र और आजाद है। ऐसे स्वतंत्र जीवी अभिव्यक्ति की आजादी के तहत देश विरोधी टिप्पणी करने से भी परहेज़ नहीं करते। हमारे देश के स्वतंत्र अपराधी भाई कानून के भय बंधन से मुक्त दिन दहाड़े लूट, हत्या, डकैती को अंजाम देने के लिए पूरी तरह आजाद हैं। भ्रष्ट कर्मी एवं जननायक योजनाओं में लूट-खसोट के लिए शत प्रतिशत स्वतंत्र हैं। ÷देख पड़ोसी जल मरे÷ महामंत्र को आत्मसात कर चुका मध्यमवर्गीय परिवार षष्ठी पूजन, सत्यनारायण कथा से लेकर वैवाहिक कार्यक्रमों में फिजूलखर्ची का दिखावा करने के लिए स्वतंत्र हैं। परिवार समाज में घूँघट में रहने वाली बहुएं मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम वैश्विक प्रदर्शन हेतु ठुमका लगाने को आजाद हैं। परिवार और समाज का सुख चैन छीनने वाले ब्रह्माण्ड के इन महान कला कृतियों की हरकतों को देख कर अंग्रेज अवश्य ही चैन की साँस ले रहे होंगे।

बहरहाल जाति और धर्म के बंधन में जकड़ और अकड़ चुकी जनता, मुफ्तखोरी एवं चुनावी जुमलों के वशीभूत सरकार बनाने वाले नागरिक तथा वायरल होने की तमन्ना में सोशल मीडिया तकनीक के गुलाम बन चुके तथाकथित पढ़े-लिखे युवक-युवतियों की ऊट-पटांग हरक़त वाली वीडियो, ब्लॉग एवं स्तरहीन रील देख कर यह समझ पाना मुश्किल लग रहा है कि हमने अंग्रेजों से आजादी हासिल की अथवा अंग्रेज़ों को हमसे आजादी मिली।

कविता

सीमा देवेन्द्र

वफा का एक सफ्हा

मैं तो हो गया तुम्हारा
कभी कहा होगा
दुष्यंत ने शकुन्तला से
के जैसे
जिन्दगी और कुछ भी नही
तेरी मेरी कहानी है

क्या लगता है मुहब्बत
छुपी है किसी से?
नही !
सहेज रख्खा है, मैंने भी
तुम्हें और तुम्हारी यादों को
एक किताब की तरह
बुक शेल्फ में
रोज पढ़ती हूँ
भरोसे के अधूरे पृष्ठ

एक एक पन्ने में कई कई वादे
वादों में
नोकझोंक, तकरार
और फिर एक सॉरी के बाद
सब कुछ नार्मल हो जाना
चलती बातों के
किसी प्यारे से मोड़ पर
अचानक तुम्हारा फोन बजना
और कहना रूको दो मिनट.....

और फिर...फिर जिक्र तक नहीं
उस लम्बे अन्तराल का
कभी
हिसाब नही लिया मैंने
उन दो मिनट का
लेकिन वहीं रूकी रहती
जहां तुम छोड़ जाया करते थे
...अक्सर!
और फिर
कहीं से सुनाई देती ये पंक्तियां
बड़ी वफा से निभाई हमनें
तुम्हारी थोड़ी सी बेवफाई !

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्रधानमंत्री का स्वाधीनता दिवस संबोधन

ऋतुपर्ण दवे

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

लालकिले से ललकार भी हुंकार भी

लालकिले की प्राचीर से लगातार 12वीं बार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का स्वाधीनता दिवस का इस बार का संबोधन कुछ अलग और कई संकेतों से भरा था। उनका 103 मिनट का भाषण न केवल अब तक का सबसे बड़ा बल्कि सख्त और साफ इरादों को दर्शाने वाला था। यह कूटनीति लिहाज से भी गहरे मायनों से भरा था। जहां एक ओर शुरुआत में ही धारा 370 को हटाकर, एक देश एक संविधान की बात कही। वहीं ऑपरेशन सिंदूर का जिक्र करते हुए सेना को खुली छूट देने का सच भी सामने रखा। दरअसल प्रधानमंत्री का यह संबोधन कई मायनों में बेहद अलग, सख्त और दुनिया के लिए कूटनीतिक बयानों जैसा था। साथ ही साथ देश में भी घट रही अस्वीकार्य घटनाओं से निपटने की चेतावनी भी। इसके अलावा देश की तरक्की, युवाओं को प्रोत्साहन, उपब्धियों और दुनिया के महत्वपूर्ण मिशन में भारतीय योगदान पर भी केन्द्रित था। प्रधानमंत्री ने शायद ही ऐसा कोई विषय छोड़ा हो जो जरूरी न हो। इतना ही नहीं इशारों ही इशारों में जहां अमेरिका और चीन को उसकी हैसियत बताई वहीं खुलेआम पाकिस्तान को भी लताड़ लगाई।

पहले जानते हैं कि उन्होने क्या-क्या कहा। पहलगाम हमले पर पाकिस्तान को आड़े हाथों लेते हुए उनके आतंकी हेडक्वार्टर्स को मिट्टी में मिलाने का जिक्र कर पाकिस्तान की नींद गायब होने की भी बात कही। लंबे समय से चल रहे न्यूक्लियर ब्लैकमेल को नहीं सहने और सेना की शर्तों पर मुंह तोड़ जवाब देने की बात भी कही। पुराने सिंधु जल समझौते को अन्याय पूर्ण बताया और कहा कि भारत की नदियां दुश्मनों के खेत सींचे और देश के किसान की धरती प्यासी रहे? सिंधु समझौते के उस स्वरूप को आगे नहीं सहा जाएगा। 21वीं सदी टेक्नोलॉजी ड्रिवन सेंचुरी है। 50-60 साल पहले सेमीकंडक्टर पर विचार हुआ। लेकिन फाइलें वहीं अटक गईं। सेमीकंडक्टर के विचार की भ्रूण हत्या हो गई। बाद में कई देश सेमीकंडक्टर में महारत हासिल कर दुनिया को अपनी ताकत को दिखा रहे हैं। मिशन मोड में इस काम को आगे बढ़ाने तथा 6 अलग-अलग सेमीकंडक्टर यूनिट्स लगाने जिसमें चार की स्वीकृति की जानकारी दी। वर्ष के अंत तक मेड इन इंडिया यानी भारत की बनी हुई चिप्स बाजार में होना बड़ी उपलब्धि होगी। प्रधानमंत्री ने अन्य कई योजनाओं, उपलब्धियों की भी चर्चा की। 11 वर्षो में सोलर एनर्जी का उपयोग 30 गुना बढ़ना। नए-नए डैम बना जल शक्ति का विस्तार कर क्लीन एनर्जी की ओर बढ़ना। 10 नए न्यूक्लियर रिएक्टर तेजी से काम करना। 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य हासिल करना ताकि देश की आजादी के 100 साल पर हमारी परमाणु ऊर्जा क्षमता 10 गुना से भी अधिक हो।

ग्लोबल वार्मिंग से निपटने तय 2030 तक क्लीन एनर्जी में 50 प्रतिशत लक्ष्य 5 साल पहले ही हासिल करना हमारी प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता है। नेशनल क्रिटिकल मिशन लॉन्च कर 1200 से अधिक स्थानों पर खोज अभियान से हम क्रिटिकल मिनरल में भी आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहे हैं जो बहुत बड़ी उपलब्धि है। युवाओं का आव्हान किया कि क्या हमारे अपना मेड इन इंडिया फाइटर जेट्स खातिर जेट इंजन भी हमारे हों? हम फार्मा ऑफ द वर्ल्ड हैं। अब समय की मांग नहीं कि हम रिसर्च और डेवलपमेंट में और ताकत लगाएं। हमारे अपने पेटेंट हों। मानव कल्याण हेतु सस्ती, सबसे कारगर नई-नई दवाइयों पर शोध हो। संकट में बिना साइड इफेक्ट के जन कल्याण में काम आए। प्रधानमंत्री मोदी ने आव्हान किया कि आईटी का युग है, डेटा ताकत है। क्या समय की मांग नहीं है कि ऑपरेटिंग सिस्टम से लेकर के साइबर सुरक्षा, डिप टेक से लेकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तक, सारी चीजें हमारी अपनी हों। अपनी सामर्थ्य शक्ति से विश्व को परिचित कराने की बात कहते हुए कहा कि हमारा यूपीआई दुनिया को अजूबा लग रहा है। रियल टाइम ट्रांजैक्शन 50 प्रतिशत अकेला भारत यूपीआई से कर रहा है। क्रिएटिव वर्ल्ड, सोशल मीडिया जितने भी प्लेटफॉर्म्स हैं हमारे अपने क्यों ना हों? क्यों भारत का धन बाहर जाए? मुझे युवाओं के सामर्थ्य पर भरोसा है।

प्रधानमंत्री ने ईवी बैटरी, सोलर पैनल, महिला स्वसहायता समूह, गुणवत्तापूर्ण उत्पाद में पहचान के साथ ही नेक्स्ट जनरेशन रिफॉर्म्स के लिए टास्क फोर्स गठन व समय सीमा में काम पूरा करने ताकि वर्तमान नियम, कानून, नीतियां, रीतियां 21वीं सदी के और वैश्विक वातावरण के अनुकूल हो, भारत को 2047 में विकसित राष्ट्र बनाने के संदर्भ में हो। नेक्स्ट जनरेशन जीएसटी रिफॉर्म्स को दिवाली का तोहफा बताते हुए लोगों की जरूरतों पर लग रहे भारी टैक्स को बहुत कम करने से एमएसएमई, लघु उद्यमियों को लाभ मिलने और रोजमर्रा की चीजें बहुत सस्ती होने से इकॉनामी को नया बल मिलने की बात भी कही। प्रधानमंत्री मोदी ने षड्यंत्र के तहत, सोची समझी साजिश के जरिए देश की डेमोग्राफी को बदलने को नया संकट बताया। घुसपैठिए, देश के नौजवानों का हक छीन रहे हैं, बहन बेटियों को निशाना बना रहे हैं। यह बर्दाश्त नहीं होगा। हमारे पूर्वजों ने त्याग और बलिदान से आजादी पाई है। एक हाई पावर डेमोग्राफी मिशन शुरू करने का निर्णय किया है। जो ऐसे भीषण संकट से निपटने के लिए तय समय में कार्य करेगा, उस दिशा में हम आगे बढ़ रहे हैं।

इस बार के संबोधन से इतना तो साफ हो गया कि प्रधानमंत्री ने ज्यादा फोकस बजाए दीर्घ कालिक योजनाओं के मौजूदा चुनौतियों और उनसे निपटने के मंसूबों को देश के सामने रखा। ब्लैकमेलिंग नहीं सहने, ऑपरेशन सिंदूर का जिक्र, स्वदेशी मजबूरी नहीं मजबूती सहित पाकिस्तान को खुलेआम तो अमेरिका को संकेतों में चेताया भी। पहली बार लालकिले से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 साल की राष्ट्र की सेवा का जिक्र करना और मां भारती के कल्याण का लक्ष्य लेकर सेवा, समर्पण, संगठन और अप्रतिम अनुशासन की चर्चा के साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को दुनिया का यह सबसे बड़ा एनजीओ है बताना तथा आपातकाल का हवाला भी देने के कई राजनीतिक मायने निकाले जाएंगे।

संभव है कि लोकसभा में आई कम सीटों, आरएसएस से और बेहतर तालमेल, विपक्ष पर पहले के मुकाबले कम हमलावर होने से सहयोगियों को भी ज्यादा सोचने का मौका नहीं देना कोई रणनीति हो। लेकिन डेमोग्रॉफी की चर्चा कर बिहार-बंगाल के आगामी चुनाव साथ ही आपातकाल की याद दिला विरोधियों सहित किन पर निशाना साधा है, देश समझता है। सेना को खुली छूट की बात दोहराना बहुत बड़ा संकेत है कि पाकिस्तान पर हमारी नजरें अभी भी टेढ़ी हैं। राजनीतिक नजरिए से भले ही उनके संबोधन के लोग अलग-अलग मायने निकालें, लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 12वीं बार सबसे ज्यादा देर, 103 मिनट संबोधित कर, दुनिया को अपने इरादे साफ कर दिए हैं। अब वक्त है पक्ष-विपक्ष का जो उनके भाषण के अपने-अपने, कैसे-कैसे और क्या-क्या मायने निकालता है।

...और बहनें विदा हो गई

कारुलाल जमड़ा

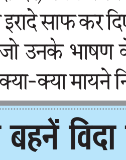

मन नहीं करता कहने का
कि आज बस में बैठ गई
चार दिन की ले यादें
घर अपने लौट गई, बहनें विदा हो गई।
भागते-भागते घर तक
लें बच्चें, सुटकेस, वर्षामृत
अभी ही तो आई थी
फिर अश्रुजल में भीगों गई,
बहनें विदा हो गई।
पापा-मम्मी की बेटियाँ
आते ही बेली रोटियाँ
रोज़ मदद का हाथ बँटाकर
जहाँ मिली जगह, सो गई
बहनें विदा हो गई।
गाँव लेकर पहुँची इस बार
बैठी बचपन के घर द्वार
देहरी, कोना, गली-मोहल्ला
जी भर लिपटकर रो गई, बहनें विदा हो गई।
लगता नहीं कि चली गई
घर अकूत आशीषें बो गई
फिर अपना धर्म निभाने
पति -पदचाप में खो गई,
....और बहनें विदा हो गई।।

वेदों में शिल्प और उनके हजारों रूपों का दर्शन

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

जीवन रहस्यमय परिस्थितियों के जंजाल में जकड़ा हुआ है, परिस्थितियाँ भी ऐसी कि कई काल के कवलित हो जाने के बाद भी पहेलियों पर से पर्दा उठ पाना संभव नहीं हो सका है और आज भी लोग उसे सुलझाने में लगे हुए हैं, आश्चर्य नहीं होगा कि कुछ पहेलियाँ कभी नहीं सुलझेंगी, सुलझनी भी नहीं चाहिए नहीं तो नये का सृजन ही संभव नहीं होगा। इन्हीं पहेलियों के भरोसे लोग अपनी-अपनी रोटियाँ सेंकने पर लगे हुए थे, हैं और रहेंगे। ऋग्वेद के दसवें मंडल के 129वें सूक्त, नासदीय सूक्त के सातों मंत्रों में जीवन के रहस्यमय परिस्थितियों, ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, अस्तित्व आदि का जिक्र है। तब न तो सत् था न ही असत् था, अंतरिक्ष, आकाश, जीवन, मृत्यु, दिन-रात, जैसी भी कोई बातें नहीं थीं।

तम् आसीत्तमसा गुहमग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वऽइदम्।
तुच्छ्येनाभ्वपिहितं यदासीत्तपसस्तन्महिना जायतैकम्।। (10/129/03)

(अग्रे) सृष्टि होने के पूर्व, (तम- आसीत) तमस् था। वह सब (तमसा गूढ़म) तमस से व्याप्त था। वह (अप्र-केतम्) ऐसा था कि उसका कुछ भी विशेष ज्ञान योग्य न था। वह (सलिलं) सलिल, एक व्यापक गतिमत् तत्व था जो (सर्वं इदम् आ) इस समस्त को व्यापे था। उस समय (यत) जो था भी वह (तुच्छ्येन) तुच्छ, सूक्ष्म रूप से (आभू-अपिहितम्) चारों ओर का सब विद्यमान पदार्थ से ढका था। (तत) वह (तपस- महिना) तपस के महान सामर्थ्य से (एकम्) एक (अजायत) प्रकट हुआ।

(10/129/03, जयदेव शर्मा)।

तमस (अंधकार, अज्ञान) और सृष्टि पर इतने गहन अध्ययनों के बाद भी अंत में प्रश्न रह ही जाता है कि कौन और कैसे? इसी सूक्त के छठे मंत्र में कौन है जो इन रहस्यों को जानता है, जिससे यह जगत प्रकट हुआ? प्रश्न रह ही जाता है हालांकि कुछ लोग निष्कर्ष तक भी पहुँचे हैं, पहुँचने के प्रयास में कुछ और भी होंगे पर बात फिर वहीं आकर रुक जाती है कि क्या जबकि सृष्टि, शून्य से ब्रह्माण्ड तक के सफर को अनगिनत वर्षों से पूरी करती चली आ रही है, में ये निष्कर्ष सभी के गूढ़ प्रश्नों का उत्तर होगी या अन्तिम होगी? नहीं बिल्कुल नहीं बल्कि हमेशा किसी नये अर्थों हेतु द्वार जरूर खुला रहेगा। कला के साथ भी कुछ ऐसा ही है। कला सृष्टि या ब्रह्माण्ड से इतर नहीं है या कह सकते हैं कि पहले जब केवल और केवल अंधकार और बस अंधकार ही था कला तब भी थी और वह एक जो अस्तित्व में आया, शून्य में घिरा हुआ, अंततः ज्ञान की शक्ति से उत्पन्न हुआ, कला तब भी थी। कला हमेशा से थी और कला हमेशा रहेगी।

ईश्वर को मानने वाले लोग इन सभी पहेलियों को ईश्वर प्रदत्त मानते हैं, प्रकृति के एक-एक वस्तुओं, घटनाओं को ईश्वर के इशारे पर ही चलने वाला मानते हैं और न मानने वाले भी कम से कम इतना तो मानते ही हैं कि चीजें जिस तरीके से एक दूसरे के साथ जुड़ी हुई हैं, तरीके से चल रही हैं कुछ तो है, कोई तो है जो सभी को संयोजित किए हुए है। धरा पर पलने वाला हर जीव अभिनय के मंच पर अपने-अपने हिस्से का अभिनय करता है और समय आते ही वही पात्र जो पूरे मनोयोग से अपने हिस्से का अभिनय कर रहा होता है, अपात्र हो जाता है और देह त्याग देता है।

प्रक्रिया यूँ ही चलती रहती है। संसार ऐसे ही चलता आ रहा है और अच्छी बात ये है कि ईश्वर को न मानने वाले लोग भी इस प्रक्रिया को मानते हैं और अनजाने में ही सही कोई तो है जिससे ये संसार चलायमान है, जो हर पात्र को नियंत्रित कर रहा है ऐसा मानते हैं। दुःख तो तब होता है जब अपने से पूर्व के तीन-चार पीढ़ी वालों के नाम न जानने वाले संसार के सृजनकर्ता का प्रमाण मांगते हैं, उनके समय काल को अंकों में बांधने का प्रयास करते हैं और मिलने न मिलने की अवस्था में अपने-अपने हिसाब से गोटियाँ फिट करते हैं ऐसी ही गोटियाँ हमारे

वेदों, ब्रह्मणों, आरण्यकों, उपनिषदों पुराणों आदि को लेकर भी बिठाया जाता रहा है और आश्चर्य कि जिन वेदों और पुराणों के अध्ययन में हमारे ऋषि-मुनि, ज्ञानी अपना पूरा जीवन काल खपा देने के बाद भी खुद को अधूरे ही मानते रहें, अंधेरे में व्याप्त अंधेरी बातों तक ही पहचानते रहे, जो पता नहीं कितनें कालों तक सिर्फ और सिर्फ श्रवण परंपरा में चलती रही और अगली पीढ़ी में स्थानांतरित होती रही और जिसके लिपिबद्ध होने के समय का कोई प्रमाणिक ज्ञान नहीं है उसे एक सीमा में बांधने की ठसक ने किसी ऐसे को जो देश के बाहर से आकर (मैक्समूलर भारत आया था भी या नहीं संशय है) पहले संस्कृत का अध्ययन करता है फिर वेदों का अध्ययन करता है वो भी बहुत कम समय तक, द्वारा निर्धारित काल को वेदों का काल माना जाने लगता है।

इस विशाल गहन अंधेरे-युक्त ब्रह्माण्ड में जहाँ करोड़ों जीवन एक साथ मिलकर कर भी शून्य से अधिक नहीं होंगे, जहाँ अस्तित्व-अस्तित्व के बीच भी शून्यता व्याप्त है, कोई एक खुद को विशाल अस्तित्व युक्त मानकर इन सभी के प्रमाणिकता का प्रमाणपत्र बाँटते की जुर्रत भी कैसे कर सकता है? क्या सांसारिक सृजन, सृष्टि के रहस्य से पर्दा कभी उठ सका? क्या वेदों के समय काल पर से भी पर्दा उठने की उम्मीद वो भी वास्तविकता के साथ है? नहीं है। फिर समय काल से परे होकर हमें अध्ययन की आवश्यकता है। वेद के प्रमाणिकता पर सवाल उठाने वालों से नासदीय सूक्त जिसका जिक्र अभी हुआ और जहाँ ब्रह्मांड की उत्पत्ति का बिल्कुल ही दार्शनिक अंदाज में उत्कृष्ट रूप में वर्णन मिलता है, हालांकि पूर्णता को प्राप्त है या नहीं है इससे इतर यह है कि विज्ञान में ऐसे ही प्रक्रिया को विग बैंग थियरी के रूप में जाना जाता है, गाया जाता है जो वेदों में पूर्व से ही विद्यमान है।

सात मंत्रों के इस सूक्त ने संसार के लोगों का ध्यान खींचा है और अध्ययन का केन्द्र विंदु भी बना है, फिलहाल भारतीय वेदों जिन्हें अपौरुषेय माना जाता है, के काल और प्रमाणिकता पर प्रश्न उठाने वालों को पहले खुद के अस्तित्व पर प्रश्न उठाना चाहिए। वेदों में प्रत्येक मंत्र में जिनकी स्तुति होती है, को देवता (विषय) कहा जाता है और जिसने मंत्र के अर्थ का सर्वप्रथम प्रदर्शन किया, ऋषि होता है। पाश्चात्य विद्वान इन्हीं ऋषियों को ही रचयिता मान बैठते हैं। खैर हमारे वेद, पुराण हमारी थाती हैं और इन पर कितनी भी चर्चा हो कम है और बड़ी बात और भी है कि यहाँ रचे मंत्रों के अर्थ भी अनेक हैं जिन्हें लोग अपने अपने हिसाब से अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु साधते हैं जिसका प्रमाण हमें कला के अधिकतर पुस्तकों से प्राप्त होता है। वेदों में, पुराणों, उपनिषदों में कला पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में कला पर विषद जानकारी उपलब्ध है जिस पर चर्चा आगे चलकर गहराई से होगी। जहाँ मनुष्यों के दैहिक प्रमाण से लेकर मंदिर निर्माण और मंदिर को मनुष्य के शरीर से तुलनात्मक अध्ययन तक का बड़े गहनता के साथ जिक्र है। चित्र, मूर्ति, काव्य, संगीत सब पर चर्चा वेदों में उपलब्ध है, पुराणों में उपलब्ध है। संलग्न कलाकृति साभार गूगल से है।

युवाओं को भटकाव से कैसे रोके

दृष्टिकोण

देवेंद्रसिंह सिसौदिया

लेखक स्तंभकार हैं।

आज के युग में नशा वृति, भटकाव और अपराध का एक प्रमुख कारण है । आज का युवा विभिन्न प्रकार के मादक पदार्थों का सेवन करने लगा है । इनके सेवन में युवतियाँ भी पीछे नहीं है । अब लड़के - लड़कियां साथ नशा करते हैं और फिर उसके मद में अनैतिक कार्य में लिप्त हो जाते हैं । यही नशा उन्हें मारधाड़, चोरी-चकारी, नाजायज सम्बंध बनाने, बलात्कार और हत्या जैसे घिनौने कार्य करने के लिए प्रेरित करता है । जब एक बार नशे का आदी हो जाता है तो उसके लिए वो किसी भी स्तर पर उतर जा कर अपराध कर बैठता है और हमेशा के लिए राह से भटक जाता हैं । आज के युवाओं का एक नया दोस्त बन गया है जिसे इंटरनेट कहते है । ये एक ऐसा जाल है जो व्यक्ति उलझाने की पूरी ताकत रखता है । देश का युवा वर्ग निश्चित रुप से भटक गया है, उसकी नज़र में अपनी सभ्यता, संस्कृतियों और मान्यताओं की कोई अहमियत नहीं है । आजकल बन रही फिल्में, सीरीयल्स और वेब सीरिजें अनैतिकताओं को बढ़ा रही हैं । नैतिक स्तर का पतन हो रहा हैं, संस्कृति पर प्रहार कर रही हैं, रिश्तों को तार - तार होते दिखाया जा रही हैं, बड़ों के प्रति आदर खत्म होना दिखा रही हैं । ऐसे माहौल में हम कल्पना कर सकते हैं कि आने वाली पीढ़ी किस प्रकार के संस्कार के साथ बड़ी हो रही है ।

देश में लगातार घट रही अविश्वसनीय घटनाएं जो कि रिश्तों को तार-तार कर रही है विशेषकर पारिवारिक नजदीकी रिश्तों को शंका के कटघरे में खड़ी कर रही है । रिश्तों में साजिशों को रचना और इस स्तर तक पहुँच जाना कि वो कल्पना से परे परिणाम प्रस्तुत कर रहे हैं । ये सब एक दिन की साजिश का परिणाम नहीं होती है बल्कि लम्बी योजनाओं और दुराचारी प्रवृतियों का परिणाम है । साजिश किसी एक व्यक्ति की सोच का परिणाम नहीं होती बल्कि एक से अधिक व्यक्तियों की मानसिक स्थिति, नैतिक मूल्यों, अनैतिक संबंधों, असीमित मोह का परिणाम होता है जो कि अपराध में परिवर्तित हो जाती है । अपराध भी कोई छोटा - मोटा नहीं बल्कि नृशंस हत्या जैसा घोर अपराध कारित कर देते हैं ।

ऐसी परिस्थितियां के लिए हम स्वयं, हमारे मित्र, हमारे साथी और हमारा परिवार जिम्मेदार होता है। इसीलिए कहते है कि व्यक्ति के संगी - साथी का चुनाव सोच-विचार कर करना चाहिए । इनकी सलाह पर व्यक्ति स्वयं और परिवार प्रभावित होता है। अच्छी संगति अच्छे संस्कारों का निर्माण करती है जो भटकाव को रोकती है। संस्कार यदि गलत हुए तो व्यक्ति की सोच में बदलाव आता है वो भ्रमित होता है और गलत मार्ग पर चल पड़ता है । बस यही गलत राह भटकाव में बदल जाती है ।

आज के युग में नशा वृति, भटकाव और अपराध का एक प्रमुख कारण है । आज का युवा विभिन्न प्रकार के मादक पदार्थों का सेवन करने लगा है । इनके सेवन में युवतियाँ भी पीछे नहीं है। अब लड़के -लड़कियां साथ नशा करते हैं और फिर उसके मद में अनैतिक कार्य में लिप्त हो जाते हैं। यही नशा उन्हें मारधाड़, चोरी-चकारी, नाजायज सम्बंध बनाने, बलात्कार और हत्या जैसे घिनौने कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। जब एक बार नशे का आदी हो जाता है तो उसके लिए वो किसी भी स्तर पर उतर जा कर अपराध कर बैठता है और हमेशा के लिए राह से भटक जाता हैं ।

आज के युवाओं का एक नया दोस्त बन गया है जिसे इंटरनेट कहते है। ये एक ऐसा जाल है जो व्यक्ति उलझाने की पूरी ताकत रखता है । देश का युवा वर्ग निश्चित रुप से भटक गया है, उसकी नज़र में अपनी सभ्यता, संस्कृतियों और मान्यताओं की कोई अहमियत नहीं है । आजकल बन रही फिल्में, सीरीयल्स और वेब सीरिजें अनैतिकताओं को बढ़ा रही हैं । नैतिक स्तर का पतन हो रहा हैं, संस्कृति पर प्रहार कर रही हैं, रिश्तों को तार- तार होते दिखाया जा रही हैं, बड़ों के प्रति आदर खत्म होना दिखा रही हैं । ऐसे माहौल में हम कल्पना कर सकते हैं कि आने वाली पीढ़ी किस प्रकार के संस्कार के साथ बड़ी हो रही है।

आज युवाओं में अचानक बड़ा व्यक्ति बनने की इच्छा अधिक प्रबल हो रही है । बड़ा व्यक्ति इनकी नज़र में वो है जिसके पास अपार पैसा और ऐशों - आराम की वस्तुएं है । बस इसी दौड़ में चल पड़ते हैं और अनैतिक कार्यों में लिप्त हो जाते हैं । शुरूआत चोरी, राहज़नी, लूट - मार जैसे छोटे - छोटे से अपराध से करते है और फिर बड़े व्यक्ति बनते - बनते बड़े अपराधी बन जाते है ।

रील युवाओं को रियल लाईफ से दूर करती जा रही है । रील बनाने के चक्कर में वो कई खतरनाक स्टंट करता है, दैहिक प्रदर्शन करता है, अश्लील दृश्य शूट करता है । बस उसका एक ही उद्देश्य होता है कि उसकी रील अधिक से अधिक लाइक और कमेंट्स प्राप्त करें ताकि उसे खूब पैसा प्राप्त हो । ऐसे अनेक घटनाएं सामने आ रही है जिसमें रील बनाने वाला जान तक गँवा रहा है या समाज को गलत संदेश दे रहा है । रील की काल्पनिक दुनिया में वो जीवन के उद्देश्य को छोड़ भटक रहा है ।

युवा परिवार से दूर होते जा रहा है । वो अब अकेला रहना चाहता है । एकाकीपन जब खाने लगता है तो किसी का साथ खोजना प्रारम्भ कर देता है । ऐसी ही खोज में अधिकांश समय गलत संगत मिलती है और उसके साथ रहना प्रारम्भ कर देता है जिसे वो लीव इन का नाम देता है । यहां भी वो किसी न किसी साजिश का शिकार हो जाता है । वर्षो साथ रहने के पश्चात उसे सत्यता से साक्षात होता है और फिर धोखेबाजी की कहानी प्रारम्भ होती है जो किसी न किसी अपराध पर जा कर खत्म होती है ।

इन सभी परिस्थितियों से जूझते - जूझते वह अवसाद की स्थिति में पहुँच जाता है । अवसाद ग्रस्त होने के पश्चात वो अलग - थलग हो जाता है । एक अच्छा और नेक इंसान बनने की बजाए वो भटकाव के झूले में हिचकोले लेने लगता है । ऐसे में वो या तो फिर से नशे से जुड़ जाता है या फिर आत्महत्या जैसा आत्मघाती कदम उठाता है ।

संयुक्त परिवार की अपनी एक मर्यादा, रीति रिवाज, संस्कार और लिहाज होता है । जिसकी वजह से एक सामाजिक, पारिवारिक और नैतिक नियंत्रण होता है जो कि उसे राह भटकने के लिए रोकता है । जैसे - जैसे हम विकास की राह पर आगे बढ़ते जा रहे है संयुक्त परिवार से दूर होते जा रहे है । एकल परिवार और अभिभावक के पास बच्चों के लिए पर्याप्त समय न होने के कारण बच्चे एकाकीपन महसूस करते है और भटकाव का मार्ग चुन लेते हैं । अतः ऐसे समय पर व्यक्ति को प्रयास करना चाहिए कि वो अच्छे मित्र बनाए, नशे से दूर रहे, संस्कारों का अनुसरण करें, दिखावा वृति से दूर रहे एवं सोशल मीडिया का संतुलित उपयोग करें।

सलाकारः ओटीटी प्लेटफॉर्म पर छा गई

वेब सीरीज समीक्षा

आदित्य दुबे,

लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

ऐसा कम ही होता है जब कोई पाँच एपीसोड वाली वेब सीरीज ओटीटी प्लेटफार्म पर आते ही छा जाये मगर हाल ही में रिलीज़ वेब सीरीज - 'सलाकार' के साथ ऐसा ही हुआ है । अपनी शानदार कहानी के दम पर हर किसी का दिल जीतने वाली इस वेबसिरीज़ ने ओटीटी पर अपना कब्जा और दर्शकों के मन में एक खास मुकाम बना लिया है । सिरीज़ की कहानी एक खास समय चक्र से निबद्ध नज़र आती है , जिसमें एक पृष्ठभूमि वर्ष 1978 और दूसरी मौजूदा समय वर्ष 2025 की दिखाई जाती है। इस जासूसी रोमांच कथा (स्पाई थ्रिलर) की पूरी कहानी भारत के सुरक्षा सलाहकार के एक सीक्रेट मिशन के इर्द-गिर्द घूमती है, जिसे उन्होंने पाकिस्तान में अंजा़म दिया था ।

सच्ची घटनाओं से प्रेरित, यह सिरीज़ एक भारतीय जासूस की कहानी है, जो अपने साहस और बुद्धिमत्ता से राष्ट्र की रक्षा के लिए दुश्मन सेना की सारी योजनाओं को? विफल कर देता है क्योंकि उसे पाकिस्तान में एक टॉप सीक्रेट परमाणु परियोजना का पता चलता है । कहानी को दो समानांतर हिस्सों में बांटा गया है, यानी आपको 1978 और 2025 की दो कहानियां एक साथ देखने को मिलेंगी । फिल्म में भारतीय जासूस अधीर (नवीन कस्तूरिया) और मरियम (मौनी रॉय), पाकिस्तानी जनरल जियाउल (मुकेश ऋषि)और पाकिस्तानी कर्नल अशफाक (सूर्या शर्मा) के चरित्र गढ़े गये हैं।

सिरीज़ में एक और आपको वर्ष 1978 में रॉ एजेंट अधीर और जनरल जियाउल की कहानी देखने को मिलेगी, वहीं आप 2025 में अशफाक और मौनी रॉय की कहानी भी देख पाएंगे । सिरीज के हर एपीसोड को बेहद शानदार तरीके से बनाया गया है.। कहानी की शुरुआत मरियम से होती है जो पाकिस्तान में रॉ एजेंट के तौर पर काम कर रही है. वह पाकिस्तानी कर्नल अशफाक के साथ गहरे रिश्ते में है । इसी बीच मरियम के हाथ कुछ अहम् फाइलें लग जाती हैं, जिनसे पता चलता है कि पाकिस्तान भारत के खिलाफ बड़ी साजिश रचने की तैयारी में है ? । मरियम द्वारा भेजी गई जानकारी से रॉ को पता चलता है कि पाकिस्तान एक परमाणु परियोजना पर काम कर रहा है, और भारत को तबाह करने की फिराक में है. ऐसे में जब यह मामला राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसी के प्रमुख तक पहुँचता है, तो देखने लायक होता है कि वह इस समस्या से कैसे निपटते हैं ।

अभिनय की दृष्टि से देखा जाये तो नवीन कस्तूरिया का आपको बिलकुल नया स्वरुप देखने को मिलेगा । उन्होंने पहली बार किसी रॉ एजेंट की भूमिका निभाई है और बड़े शानदार तरीके से निभाई है वहीं, बात करें मौनी रॉय की तो एक एजेंट के रूप में आपने पहले भी उन्हें देखा है और वह इस रोल को बहुत ही बेहतरीन तरीके से निभाती हैं और इस सिरीज में उन्होंने अपना श्रेष्ठ दिया है. । एक दौर था जब बॉलीवुड फिल्मों में आपको मुकेश ऋषि एक पाकिस्तानी आतंकवादी के रूप में दिखाई देते थे अब एक बार फिर उन्हें पाकिस्तानी रोल दिया गया और इस रोल को निभाने में वह पहले से ही सक्षम हैं । सूर्या शर्मा ओटीटी के एक उभरते हुए कलाकार हैं और इस सिरीज के बाद उनके करियर को नई ऊंचाई मिल सकती है ।

फिल्म में निर्देशन फारुक कबीर का है और उन्होंने इस सिरीज में हर छोटी सी छोटी चीज को बड़ी बारीकियों से देखा और उस पर काम किया है। कुल मिलकर देखा जाए तो आप इस सिरीज को जिओ हॉटस्टार पर घर बैठे अपने पूरे परिवार के साथ देख सकते है औरयह कुशल निर्देशन से ही सम्भव हुआ ।तकनीकी रूप से भी यह सिरीज़ मजबूत है। अमर मोहिले का बैकग्राउंड म्यूजिक और शब्बीर अहमद का संगीत, खासकर जोशीला टाइटल ट्रैक इसे निखारता है। जीतन हरमीत सिंह की सिनेमैटोग्राफी 1970 के दशक को प्रभावी ढंग से पर्दे पर जिन्दा करती है।

देशभक्ति के उल्लास के साथ एम्स भोपाल में 79वां स्वतंत्रता दिवस मनाया गया

भोपाल। एम्स भोपाल में 79वां स्वतंत्रता दिवस देशभक्ति और उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर संस्थान के संकाय सदस्य, अधिकारी, नर्सिंग स्टाफ, कर्मचारी और छात्र-छात्राएं बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। सभी ने राष्ट्गान की गूंज और तिरंगे की शान के साथ स्वतंत्रता दिवस की गरिमा को अनुभव किया। समारोह का शुभारंभ ध्वजारोहण और राष्ट्गान के साथ हुआ। इस अवसर पर एम्स भोपाल ने स्वतंत्रता संग्राम के वीर जवानों को नमन करते हुए कहा कि उन्हीं के बलिदान और साहस की वजह से आज हम स्वतंत्र वायुमंडल में सांस ले पा रहे हैं। संस्थान ने यह भी संदेश दिया कि एम्स भोपाल का प्रत्येक सदस्य निष्ठा और समर्पण के साथ कार्य करते हुए चिकित्सा सेवाओं और शोध के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को प्राप्त करने का संकल्प ले। डीन (शैक्षणिक) ने स्वतंत्रता दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वतंत्रता केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं है, बल्कि यह हमें राष्ट निर्माण की निरंतर यात्रा की याद दिलाती है। उन्होंने सभी संकाय सदस्य, रेजिडेंट डॉक्टर, नर्सिंग स्टाफ, प्रशासनिक अधिकारी, कर्मचारी और छात्रों से आह्वान किया कि वे अपने आचरण और ज्ञान के माध्यम से संस्थान को और बेहतर ढंग से संचालित करें तथा इसे सर्वश्रेष्ठ बनाएँ। कार्यक्रम के दौरान छात्रों और कर्मचारियों ने देशभक्ति गीत, नृत्य और नाट्य प्रस्तुतियां दीं, जिनमें स्वतंत्रता संग्राम की गाथाओं और शहीदों के बलिदान को जीवंत किया गया। बच्चों की प्रस्तुतियों ने विशेष रूप से वातावरण को भावपूर्ण और प्रेरणादायी बना दिया। ऐसे आयोजन न केवल स्वतंत्रता दिवस की गौरवशाली परंपरा को जीवंत करते हैं, बल्कि समाज और राष्ट के प्रति जिम्मेदारी, सहयोग और एकजुटता की भावना को भी सुदृढ़ करते हैं। कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागियों और उपस्थित लोगों के बीच मिष्ठान वितरण किया गया।

मोहन वर्मा को मिला सेवा कामों के लिये सम्मान

देवास। शहर के सामाजिक कार्यकर्ता, साहित्यकार तथा एक्ट ईव एजुकेशन एंड सोशल वेलफेयर सोसायटी अध्यक्ष मोहन वर्मा को जिला प्रशासन द्वारा उनके द्वारा किये जा रहे सामाजिक सेवा कामों के लिये जिला कलेक्टर श्री ऋतुराज सिंह द्वारा प्रशंसा पत्र एवं स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया गया । पुलिस परेड ग्राउंड पर स्वतंत्रता दिवस पर हुए इस समारोह में जिला पंचायत सीईओ सुश्री ज्योति शर्मा,अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री जयवीर सिंह भदौरिया तथा जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती लीला अटारिया उपस्थित थी ।

उल्लेखनीय है कि संस्था एक्ट ईव सोसायटी विगत दस वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रही है और अब तक 62 से अधिक फर्नीचर विहीन सरकारी स्कूलों में समाजसेवियों और उद्योगों की सहायता से 2500 से अधिक फर्नीचर सेट उपलब्ध करवा चुकी है जिसका लाभ 7500 से अधिक बच्चे ले पा रहे है इसके अलावा 15 से अधिक गांवों की बेटियों को स्वच्छता और बेहतर स्वास्थ्य के लिये सेनेटरी पेड वेडिंग मशीने, स्कूलों में पेयजल हेतु आरओ,कम्प्युटर पंखें,जैसी सुविधाएं जुटाने हेतु कृत संकल्पित है ।

देशभक्ति के माहौल में घुला कृष्ण भक्ति का रंग वतनपरस्ती और कृष्ण भक्ति के गीतों की महफिल

इंदौर/देवास/मोहन वर्मा । इस बार स्वाधीनता दिवस और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एक साथ आए और इस मौके पर अदब की महफिल ने लाभ मंडपम में गीतों की महफिल सजाई जिसमें वतनपरस्ती के तरानों के साथ साथ कृष्ण भक्ति का रंग भी नजर आया। हॉल में बैठे श्रोताओं को तिरंगे भी वितरित किए गए थे जिन्हें लहराते हुए उन्होंने गीतों का आनंद लिया। गीतों की लय के साथ लहराते तिरंगों ने माहौल में जोश भर दिया। गले में तिरंगा दुपट्टा डाले श्रोता कुछ गीतों पर थिरके भी।

महफिल की शुरुआत वंदे मातरम से हुइ और फिर मंच पर गायक शैलेष भट्ट ने एक के बाद एक दो गीतों से देशप्रेम का माहौल और गहरा कर दिया। उन्होंने पहले गाया जहां डाल डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा और इसके बाद है प्रीत जहां की रीत सदा..। शैलेष ने हम उस देश के वासी हैं जिस देश में गंगा बहती है, छोड़ो कल की बातें कल की बात पुरानी, जैसे पुराने गीतों के साथ नए दौर का गीत जिंदगी मौत न बन जाए यारों भी गाया। उन्होंने शिवांगी मिश्रा पाठक के साथ सुनो गौर से दुनिया वालों भी गाया। शिवांगी ने ए मेरे वतन के लोगों गाकर सुनने वालों को भावुक कर दिया। कार्यक्रम में कोरस का समन्वय कर रहे गायक स्वरांश पाठक ने भी कुछ गीत गाए जिनमें उन्हें सुरेश कैथवास और शिवांगी का साथ भी मिला।

श्री राम फार्मेसी कॉलेज जामठी में मनाया स्वतंत्रता दिवस

बैतूल। श्री राम फार्मेसी कालेज में स्वतंत्रता दिवस के अवसर

पर सोसायटी अध्यक्ष श्रीमती सुशीला देवी अग्रवाल व ध्रुव प्रकाश अग्रवाल द्वारा ध्वजा रोहण किया गया। इस अवसर पर श्रीमती अंजना अग्रवाल, प्राचार्य श्रीमती रोशनी खातरकर व सभी स्टाफ एवं विद्यार्थीयो की उपस्थिति में कार्यक्रम हुआ। छात्र-छात्राओं, यशवी डिगरसे, वेद डिगरसे, कुमुद आवठे, मानवी राठौर के द्वारा देश भक्ति गीत एवं नृत्य की प्रस्तुति दी गई। प्राचार्य श्रीमती रोशनी खातरकर द्वारा स्वतंत्रता दिवस पर स्वतंत्रता सैनानियो के बलिदान एवं उनके विचारो को प्रस्तुत किया। साथ ही स्व. डॉ. मंगल प्रसाद अग्रवाल के विचारो का स्मरण किया गया।

जिले में हर्षोल्लास और उमंग के साथ मनाया गया स्वतंत्रता दिवस

जिला स्तरीय मुख्य समारोह में प्रभारी मंत्री श्री पटेल ने किया ध्वजारोहण

बैतूल। देश के 79 वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जिला मुख्यालय में मुख्य समारोह शुक्रवार को बड़े ही उत्साह और गरिमा के साथ आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा विभाग के राज्यमंत्री व जिले के प्रभारी मंत्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल ने ध्वजारोहण कर परेड की सलामी ली। आकर्षक परेड प्रस्तुति के बाद उन्होंने परेड कमांडरों से परिचय प्राप्त किया और सभी को स्वतंत्रता दिवस की

शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी तथा पुलिस अधीक्षक निश्चल एन झारिया विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान भोपाल में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव के संदेश वाचन को बड़ी एलईडी के माध्यम से देखा व सुना गया। सभी ने पूरे मनोयोग से मुख्यमंत्री जी के संदेश को देखा और सुना। स्वतंत्रता दिवस का यह पर्व पूरे जिले में देशभक्ति, उत्साह और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों, सरकारी कार्यालयों और सामाजिक संगठनों द्वारा भी ध्वजारोहण, सांस्कृतिक कार्यक्रम और देशभक्ति गीतों के आयोजन किए गए।

जिला स्तरीय समारोह को संबोधित करते हुए प्रभारी मंत्री श्री पटेल ने स्वतंत्रता दिवस के पावन पर्व पर जिले के सभी नागरिकों को बधाई देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के आत्मनिर्भर और विकसित भारत के विजन को लेकर मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने आत्मनिर्भर और विकसित मध्यप्रदेश का जो रोडमैप बनाया है, उससे निश्चित ही प्रदेश प्रगति का नया अध्याय लिखेगा। प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन एवं मुख्यमंत्री के नेतृत्व में विकसित मध्यप्रदेश का लक्ष्य साकार करने के लिए विकसित जिले की संकल्पना और योजना के साथ हम आगे बढ़ रहे हैं। हमारे जिले की अपनी क्षमताएं, आकांक्षाएं, अवसर और चुनौतियां हैं। यही हमारे जिले को विशेष बनाती हैं। पवित्र ताप्ती नदी के उद्गम स्थल और समृद्ध आदिवासी संस्कृति की धरोहर को संजोए हुए हमारा जिला बैतूल पिछले एक वर्ष में विकास के नए आयाम स्थापित करने में सफल रहा है। जनभागीदारी, जनप्रतिनिधियों की प्रतिबद्धता और प्रशासनिक दक्षता के संयुक्त प्रयासों से हमने सभी क्षेत्रों में न केवल लक्ष्य प्राप्त किए हैं, बल्कि नई मिसालें भी स्थापित की हैं।

राजस्व प्रकरणों के निराकरण में बैतूल अग्रणी – बैतूल जिला राजस्व प्रकरणों के निराकरण में अग्रणी जिलों में सम्मिलित है। आयुष्मान भारत निरामय योजना के अंतर्गत 12 लाख 9 हजार से अधिक पात्र व्यक्तियों के कार्ड बनाकर 100 प्रतिशत से अधिक लक्ष्य प्राप्त किया है। राष्ट्रीय टीबी-मुक्त ग्राम पंचायत अभियान में 554 में से 219 पंचायतें टीबी मुक्त घोषित हुई और हमें राज्य स्तरीय सम्मान प्राप्त हुआ है। सिकल सेल स्क्रीनिंग में करीबन 6 लाख 80 हज़ार लोगों की जांच की गई है। इसके अलावा जिले में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि और मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना के अंतर्गत 2 लाख 65 हजार किसानों को कुल 1 हजार 579 करोड़ रुपये की सहायता राशि वितरित हुई। वर्ष 2024-25 में आयोजित राजस्व महाभियान में 79 हजार से अधिक राजस्व प्रकरणों का निराकरण कर राजस्व कार्यों को गतिशीलता प्रदान की गई है।

विद्यार्थियों ने नृत्य की दी मनमोहक प्रस्तुति

सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान लिटिल फ्लावर हायर सेकेंडरी स्कूल सदर के विद्यार्थियों ने देश मेरा रंगीला गीत पर नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति दी। इसके अलावा विद्यार्थियों ने राजस्थानी के कालबेडियां, महाराष्ट के लावणी, पंजाब के भंगडा, मप्र के गोंडी, असम बिहु, हरियाणा के हरियाणवी गीत पर भी प्रस्तुति दी। द मानसरोवर स्कूल बडोरा के विद्यार्थियों ने ओ माय मेरे देश की आजादी का सवेरा लाने का रोशन सा ख्वाब सजाये गीत के बोल पर तथा सरस्वती विद्या मंदिर कालापाठा के विद्यार्थियों ने ये तो कश्मीर है इसकी फिजा का क्या कहना, देश दुल्हन है ऑपरेशन सिंदूर को दर्शाता है, माई तेरी मिट्टी बुलाए हम तिरंगा ओढ़ कर आए गीत के बोल पर आकर्षक नृत्य की प्रस्तुति दी। इसी प्रकार आरडी पब्लिक स्कूल कालापाठा के विद्यार्थियों ने आज सिंह गरजेगा, मैंने लगाया बसंती रंग गीत के बोल पर मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया।

देहदान करने पर परिजनों को किया सम्मानित

कार्यक्रम के दौरान प्रभारी मंत्री श्री पटेल ने स्व. ललित कुमार जैन के मरणोपरांत उनके पुत्र विवेक जैन द्वारा उनके पिता की देह को मानव परोपकार के लिए चिकित्सकीय अनुसंधान के लिए मेडिकल कॉलेज को देहदान करने पर प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इसी प्रकार स्व. सूरत लाल सरले के मरणोपरांत उनके पुत्र ओमप्रकाश सरले द्वारा उनके पिता की देह को मानव परोपकार के लिए चिकित्सा अनुसंधान के लिए मेडिकल कॉलेज को देहदान करने पर प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

स्कूल के निर्माण होने से राष्ट्रीय कार्यक्रम के आयोजन के लिए पर्याप्त जगह हुई खत्म

विजय भवन प्रांगण में पड़ रही आयोजन में जगह की कमी

बैतूल/शाहपुर। नगर के हाईस्कूल मैदान पर सांदीपनि स्कूल का निर्माण होने से राष्ट्रीय कार्यक्रम के आयोजन में परेशानी हो रही है। नगर के एकमात्र हाईस्कूल के मैदान का उपयोग राष्ट्रीय कार्यक्रम 15 अगस्त, 26 जनवरी का मुख्य समारोह, मुख्यमंत्री सामूहिक कन्या विवाह, आमतौर पर खेल, खेल-कूद, समारोह और नेताओं की सभा, हेलीपेड, चुनावों सहित, अन्य बाहरी गतिविधियों के लिए किया जाता था, जो यहां मंच सहित राष्ट्रीय कार्यक्रमों के आयोजनों के लिए भी एक महत्वपूर्ण स्थान था। इस उपयोगी मैदान पर अब सांदीपनि स्कूल का स्कूल भवन के निर्माण जोरशोर से किया जा रहा है। हाईस्कूल मैदान पर स्कूल भवन के निर्माण कार्य प्रारंभ होने से अब नगर में इन गतिविधियों के लिए कोई बड़ी जगह नहीं बची। जिससे कि राष्ट्रीय कार्यक्रम के आयोजन या अन्य भव्य आयोजन हो सके। मजबूरन विजय भवन के सामने छोटे से प्रांगण में राष्ट्रीय पर्व के मुख्य कार्यक्रम करवाए जा रहे है। जिस जगह राष्ट्रीय और सामाजिक आयोजन हो रहे है। यह जगह ब्लॉक मुख्यालय के मुख्य कार्यक्रम कराने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। दर्जनों की संख्या में ब्लॉक मुख्यालय पर सरकारी स्कूल हैं। अगर पूरे सरकारी स्कूल के बच्चे कार्यक्रम में पहुंच जाएं तो जगह छोटी पड जायेगी। कुल मिलाकर नगर का एक मात्र मैदान नेताओं की आपसी गुटबाजी का शिकार होकर रह गया। हाईस्कूल के मैदान का उपयोग स्कूल भवन के निर्माण के लिए किया जा रहा हैं, वही छात्रों और समुदाय को इन महत्वपूर्ण अवसरों से वंचित होना पड़ रहा हैं। हाईस्कूल के मैदान पर स्कूल भवन का निर्माण राष्ट्रीय कार्यक्रमों के आयोजन और छात्रों और समुदाय के लिए अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियों में बाधा उत्पन्न हो रही है। नगर के ऐतिहासिक हाईस्कूल मैदान के अस्तित्व को समाप्त करने की कोशिश पूरी हो गई है। मैदान में सांदीपनि स्कूल भवन निर्माण शुरू कर दिया गया है। निर्माण को लेकर नींव भी खोद दी गई है। मैदान के अस्तित्व पर संकट आने से वहां खेलने वाले खिलाडियों के अलावा मॉर्निंग वाक करने वाले लोग व खेल प्रेमी चयनित जगह का विरोध कर रहे थे।

मानव श्रृंखला से सजीव हो उठी तिरंगे की आकृति

हर घर तिरंगा अभियान में उत्कृष्ट विद्यालय का अभिनव प्रयास

बैतूल। 79 वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर उत्कृष्ट विद्यालय के एनसीसी कैडेट्स ने मेजर ध्यानचंद हॉकी स्टेडियम में मानव श्रृंखला बनाकर हर घर तिरंगा-हर घर स्वच्छता का संदेश अनोखे तरीके से दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत विभिन्न संगठनों द्वारा विगत एक सप्ताह से तिरंगा यात्रा व रैली का आयोजन कराया जा रहा है।

जिला मुख्यालय पर उत्कृष्ट विद्यालय में 13 मप्र बटालियन एनसीसी नर्मदापुरम के कमान अधिकारी कर्नल एसपी सिंह द्वारा जारी निर्देश व प्राचार्य सत्येंद्र उदयपुरे के मार्गदर्शन में लगभग दो सैकड़ा से भी अधिक कैडेट्स व विद्यार्थियों द्वारा तिरंगा के आकृति की मानव श्रृंखला बनाई गई। राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान में बनाई गई इस श्रृंखला का सफल संचालन संस्था एनसीसी ऑफिसर ओम द्विवेदी द्वारा किया गया जिसमें एनसीसी के प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के छात्र सैनिक, 14 पूर्व छात्र सैनिक व शाला के अन्य छात्र शामिल हुए। श्रृंखला में कैडेट्स ने देश भक्ति के नारे लगाकर जोश भर दिया। श्रृंखला को विद्यालय के पूर्व एनसीसी छात्र मोनू पाटनकर व एडिटर भरत डोंगरे ने ड्रोन से शूट कर सहयोग दिया गया।

एनसीसी प्लाटून द्वारा अन्य विद्यार्थियों को उनके घर पर तिरंगा लगाने हेतु 151 राष्ट्रीय ध्वज का वितरण किया गया। श्रृंखला समापन पर एनसीसी ऑफिसर ने छात्र सैनिकों को राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान एवं संबंधित सावधानियों से अवगत कराया। श्रृंखला निर्माण में स्कूल के सभी शिक्षको का सहयोग रहा।

ताप्ती वार्ड में नदियों सा बह रहा रास्ते पर पानी

आफत की वर्षा, ताप्ती जलमार्ग ने बदली दिशा

बैतूल/ मुलताई। पवित्र नगरी में आज पूरे दिन से हो रही तेज वर्षा के चलते जनजीवन अस्त व्यत है। ताप्ती वार्ड पटेल वार्ड में जल भराव की समस्या के चलते हालात बद से बत्तर होते जा रहे हैं। ताप्ती वार्ड में एक बार फिर वर्षा आफत की वर्षा सिद्ध हो रही है रास्ते नदिया बनी हुई है और रास्तों पर घुटने घुटने भर पानी तेज गति से

बह रहा है। ताप्ती वार्ड में रेलवे कॉलोनी की ओर से आने वाले ताप्ती सरोवर जल मार्ग ने क्षमता पारकर अपना रास्ता बदल दिया है। और अब जल मार्ग का तेज रफ्तार पानी हनुमान मंदिर की पिछली गली एवं सामने की मार्ग से बह रहा है। ताप्ती सरोवर से जुडने वाला यह प्रमुख जल मार्ग है जिसके निर्माण की मांग वर्षों से की जा रही है। पिछले तीन वर्षों में आधा दर्जन बार प्रदेश स्तर के अधिकारी आकर इस नाले का निरीक्षण कर चुके हैं और योजनाओं की घोषणा भी किंतु कोई हल नहीं निकला। इसके अलावा स्वर्गीय रवि यादव के घर के सामने वाला भाग भी जलमग्न हो गया है और नागरिकों का मार्ग से पैदल गुजरना भी कठिन हो गया है। पटेल वार्ड में भी जल भराव की समस्या चिंताजनक बताई जा रही है। यहां पर भी सीएमओ बंगले के निचले भाग में बड़ी मात्रा में जल भराव हुआ है अनेक घरो में पानी घुस जाने के कारण लोग भारी दिक्कतों का सामना कर रहे हैं। ताप्ती वार्ड पार्षद निर्मला उबनारे में बताया कि अब उन्होंने छोटे तालाब में जाने वाला पानी को खुलवा दिया है और जिस नल ने अपना मार्ग परिवर्तन किया है उसके जल निकासी के भी प्रयास किए गए हैं 2 घंटे में रोड से बहने वाला पानी कम हो जाएगा उन्होंने कहा कि मार्ग से पानी वह जरूर रहा है लेकिन किसी के घर में पानी नहीं भरा यह अच्छी बात है और जहां जल भराव दिखाई दे रहा है यह खाली प्लाट है जिसके कारण यह जल भराव बड़ी मात्रा में दिखाई देता है। ताप्ती सरोवर एक बार फिर ओवरफ्लो हो गया है। जिससे नगर में उत्साह का माहौल है। ताप्ती सरोवर की जलधारा दोनों शिव मंदिरों के मध्य से बनी सीडीओ से होकर सूर्यकुंड में प्रवेश कर रहा है और यह मनोहारी दृश्य देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग ताप्ती तक पहुंच रहे हैं।

15 अगस्त को धर्मार्थ होमियो चिकित्सालय में झंडा वंदन किया गया झंडाबंधन

भोपाल। डॉ.दिनेश जोशी उप पुलिस अधीक्षक ने किया धर्मार्थ होमियो चिकित्सालय के डॉ डीएस चंदेल संरक्षक ,डॉ शशि जोशी अध्यक्ष, डॉक्टर सुषमा पाटील उपाध्यक्ष, डॉ अनिरुद्ध मोर सचिव , डॉक्टर रत्नमाला सहसचिव , डॉक्टर कमलेद्र सर डॉ संदीप तिवारी , डा.पायल,डॉ. पंचशील , डा.सोनिया (बॉम्बे) , हेमंत सुमन शर्मा , संजीव शांडिल्य , पूनम शर्मा आदि गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे कार्यक्रम के उपरांत एक तिरंगा यात्रा विजय मार्केट तक निकल गई कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ !

मऊगंज जिले में स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने प्राथमिकता से कराए जा रहे हैं कार्य: उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

निर्माणाधीन जिला अस्पताल भवन का किया निरीक्षण

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि मऊगंज जिले के गठन के साथ ही इस जिले में विकास के द्वार खुल गए हैं। जिले में स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए सभी कार्य प्राथमिकता से कराए जा रहे हैं। 40 करोड़ रुपए की लागत से सुविधायुक्त 100 बिस्तरों का जिला चिकित्सालय भवन निर्माणाधीन है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने निर्माणाधीन भवन का निरीक्षण किया तथा पूर्ण गुणवत्ता के साथ निर्माण कराने के निर्देश दिए।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि लेआउट देकर परिसर का सीमांकन कराते हुए सभी कार्य प्रारंभ कराएं तथा नियत समय सीमा में पूर्ण कराएं। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि मऊगंज जिले के स्वास्थ्य केन्द्रों में चिकित्सकीय स्टाफ व उपकरण की कमी नहीं होगी। उन्होंने निर्देश दिए कि प्रोएक्टिव होकर कार्य करें। जिले के स्वास्थ्य केन्द्रों का लगातार भ्रमण कर स्वास्थ्य केन्द्रों के संचालन की मॉनीटरिंग करें। उन्होंने कहा कि ओपीडी पर विशेष ध्यान दें। ग्रामीण स्तर की स्वास्थ्य सेवाएं बेहतर होने से मातृ मृत्यु दर व शिशु मृत्यु दर कम होगी तथा जिला स्तर पर व रीवा के अस्पतालों में मरीजों की भीड़ कम होगी। जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक करने के निर्देश भी उप मुख्यमंत्री ने दिए।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने सुपर स्पेशलिटी अस्पताल रीवा में कैथलैब मशीन का किया लोकार्पण

कॉर्डियालॉजी विभाग को सेंटर ऑफ एक्सीलेंस बनाया जाएगा

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने सुपर स्पेशलिटी अस्पताल रीवा में में 8 करोड़ रुपए की लागत की अत्याधुनिक कैथलैब मशीन का लोकार्पण किया। उन्होंने कहा कि सुपर स्पेशलिटी अस्पताल विन्ध्य क्षेत्र के मरीजों के इलाज के लिए वरदान साबित हुआ है। इस अस्पताल में विन्ध्य के साथ-साथ सीमावर्ती राज्य के मरीजों के हृदयरोग का इलाज किया जा रहा है। अत्याधुनिक कैथलैब मशीन हृदयरोग के इलाज में मददगार साबित होगी।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि सुपर स्पेशलिटी अस्पताल चिकित्सा सेवा के मामले में देश में दूसरे और प्रदेश में प्रथम स्थान पर है। यहाँ के चिकित्सकीय स्टाफ के मनोयोग और समर्पण भाव से मरीजों की सेवा करने से अस्पताल ने विशिष्ट स्थान बनाया है। इसी का परिणाम है कि विन्ध्य क्षेत्र के 80 प्रतिशत हृदय रोग के मरीजों का इलाज यहाँ हो रहा है। उन्होंने कहा कि कॉर्डियालॉजी विभाग को सेंटर ऑफ एक्सीलेंस बनाकर और सुविधा संपन्न बनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि इलाज के लिए हर प्रकार के चिकित्सकीय उपकरण उपलब्ध कराए जा रहे हैं तथा चिकित्सकों सहित अन्य स्टाफ की भी भर्ती प्राथमिकता से की जा रही है। उप मुख्यमंत्री ने सुपर स्पेशलिटी अस्पताल में संचालित यूरोलॉजी, न्यूरोलॉजी तथा नेफ्रालॉजी विभागों के चिकित्सकों द्वारा मरीजों को प्रदाय की जा रही चिकित्सा सुविधा के बारे में जानकारी ली। उन्होंने कहा कि परिजनों की काउंसलिंग कर ब्रेन डेड मरीज के अंगदान के लिए परिजनों को जागरूक करें ताकि दूसरे मरीज की जान बचाई जा सके। यह पुण्य का कार्य है। शासन द्वारा अंगदान करने पर गार्ड ऑफ आनर तथा सम्मान पत्र दिया जाता है। कॉर्डियालॉजी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ व्हीडी त्रिपाठी ने बताया कि अस्पताल में पूर्व से एक कैथलैब स्थापित है। दूसरी कैथलैब के बन जाने से हृदयरोगियों के इलाज के लिए सुगमता हो जाएगी। सांसद श्री जनार्दन मिश्र, अध्यक्ष नगर निगम व्यंकटेश पाण्डेय, डीन मेडिकल कालेज डॉ सुनील अग्रवाल, अधीक्षक सुपर स्पेशलिटी अस्पताल डॉ अक्षय श्रीवास्तव, अधीक्षक संजय गांधी अस्पताल डॉ राहुल मिश्रा, डॉ एसके त्रिपाठी, डॉ इमरान, डॉ अवनीश शुक्ला सहित चिकित्सक उपस्थित रहे।

नई फिल्म: कुली

रजनीकांत की एंट्री के साथ वक्त थमा

परदे पर जैसे ही रजनीकांत की एंट्री पर्दे पर हुई, मानो वक्त रुक गया। उनकी एंट्री को बाकायदा परदे पर पॉज कर दिया गया। दर्शकों को पूरा मौका दिया गया उस पल का जश्न मनाने का। एक बार फिर सिनेमाघर की लाइट जला दी गई, ढोल फिर से बजने लगे, लोग सीटों से उठकर नाचने लगे। फिल्म की रिलीज के पहले शो को मुंबई के थियेटर में कुछ तरह एन्जॉय किया गया।

यूं तो रजनीकांत की बहुत-सी फिल्में देखी हैं, पर वो जो एक अनुभव उनकी फिल्म उनके फैन्स के साथ देखने में होता है, वो बिल्कुल अलग है। फिल्म के शुरू होने से लेकर फिल्म खत्म होने तक जो नजारा देखने को मिलता है, वो एक ऐसा अनुभव है जिसे जब तक कोई खुद महसूस न करे, तब तक उसे बयान करना मुश्किल है। यूं तो सोशल मीडिया पर उनकी फिल्म रिलीज के वक्त उनके फैन्स की दीवानगी दर्शकों ने खूब देखी होगी, जैसे उनके कटआउट को दूध से नहलाना, नारियल फोड़ना, हार चढ़ाना।

हैरानी तब होती है कि लोग सुबह 6 बजे मुंबई के अलग-अलग कोनों से कई किलोमीटर का सफर तय करके फिल्म देखने आते हैं। ऐसा ही हुआ 'कुली' के पहले दिन, पहले शो पर. बारिश का दिन था। फिर भी मुंबई के वडाला के मिराज आईमैक्स पर रजनीकांत के फैन्स ने 4 स्क्रीन्स बुक कर रखी थीं। फैन्स से सिनेमा हॉल की लॉबी खचाखच भरी हुई थी। ढोल-नगाड़े, बाजे खुले आसमान के नीचे बारिश में और लॉबी के अंदर हजारों लोग नाचते हुए फिल्म की रिलीज का जश्न मना रहे थे। लोग सिनेमा हॉल में घुसे, लेकिन नाच-गाना और ढोल यहां भी चल रहा था। साथ ही तालियां, सीटियां और 'थलाइवा' के नारे लग रहे थे।

असली नजारा जिसका इंतजार था, जब पर्दे पर रजनीकांत की एंट्री होगी, तो माहौल क्या होगा! जैसे ही रजनीकांत की एंट्री पर्दे पर हुई, मानो वक्त रुक गया। उनकी एंट्री को बाकायदा पर्दे पर पॉज कर दिया गया और दर्शकों को पूरा मौका दिया गया उस पल का जश्न मनाने का। एक बार फिर सिनेमाघर की लाइट जला दी गई, ढोल फिर से बजने लगे, लोग सीटों से उठकर नाचने लगे। कुछ वक्त बाद फिल्म को फिर से शुरू किया गया, पर फैन्स का शोर जारी था। जैसे ही रजनीकांत स्क्रीन पर गाने पर नाचते नजर आए, एक बार फिर फैन्स सीट से उठ खड़े हुए. सीट से लेकर आइल और स्क्रीन के पास लोग नाचने लगे।

जहां तक फिल्म की बात है, तो दर्शक जब थिएटर में बैठे 50 साल पुराने रजनीकांत का कूल अंदाज देखते हैं, तो संतुष्ट होते हैं। लेकिन, सवाल उठता है कि स्वैग, एक्शन और सुपरस्टार कैमियो के बीच में एक कहानी भी होती है वो कहां हैं! जवाब मिलता है कि

अब तक कैथी, मास्टर, विक्रम और 'लियो' जैसी फिल्में बनाने वाले लोकेश कनगराज इस फिल्म में कहानी के मामले पर चूक गए। यह भी कह सकते हैं कि कहानी के मामले में 'कुली' उनकी सबसे कन्फ्यूजिंग और कमजोर फिल्म है।

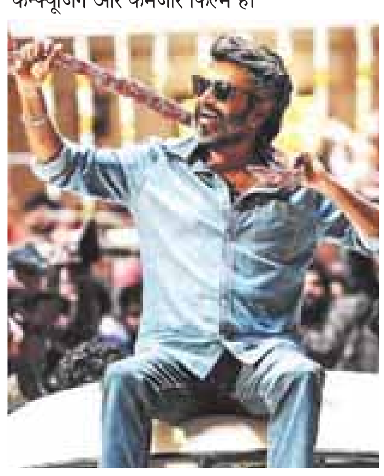

रजनीकांत के सिनेमा में 50 साल पूरे होने का त्योहार मनाया जा रहा है और इसी आंधी में यह फिल्म चलेगी भी। वैसे भी साउथ की फिल्मों में स्टोरी कम और एक्शन व स्वैग ज्यादा देखा जाता है। फिल्म कहीं भी बोर नहीं करती। फिल्म की कहानी काफी पेचीदा है। इसे बताकर समझाया नहीं बल्कि देखकर ही समझा जा सकता है। मोटे तौर पर बस इतना समझा जा सकता है कि कहानी एक कुली देवा (रजनीकांत) की है, जो अपने दोस्त राजशेखर (सत्यराज) की मौत की वजह ढूंढने निकलता है।

इस सफर में सत्यराज की बेटी प्रीति (श्रुति हासन) और देवा एक दूसरे की मदद करते हैं। जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है साइमन जेवियर (नागार्जुन), दयाल (सौबिन शाहिर), कलीशा (उपेंद्र) और दाहा (आमिर खान) के किरदार भी इससे जुड़ते जाते हैं। फिल्म में एक साथ कई किरदार होने के चलते आप कुछ जगहों पर कन्फ्यूजन भी होते है। कई सारे ट्विस्ट होने की वजह से स्क्रीन प्ले कमजोर लगता है। साथ ही अंत में इसकी कहानी को बेवजह बड़ा दिखाने का प्रयास किया गया है। लोकेश ने अंत में यह संभावना भी छोड़ी है कि वे जल्द ही आमिर और रजनीकांत को फिर साथ ला सकते हैं।

फिल्म रजनीकांत की है तो पूरे समय फोकस भी उन पर ही रहता है। रजनी ने एक्शन के साथ ही कॉमेडी भी की है। उनका तो स्वैग ही अलग है। नागार्जुन की हिंदी उनके अभिनय पर भारी पड़ती है, पर उनका काम ठीक है। सौबिन-शाहिर ने बहुत कमाल अभिनय किया है। उन्हें देखकर डर लगता है। सत्यराज ने जितना भी किया ठीक ठाक काम किया है। श्रुति हासन पूरी फिल्म में भागती ही नजर आई। लोकेश ने उन्हें एक्टिंग करने का मौका ही नहीं दिया। उपेंद्र का काम बहुत कम है और ज्यादातर सीन में उनके एक्सप्रेशन भी एक से ही है। आमिर थोड़े अलग अवतार में दिखे हैं। उनका कैमियो मजेदार है। रचिता राम ने दर्शकों को अपने अभिनय से चौंकाया है।

रियल बॉक्स

'देवदास' से 'सैयारा' तक दर्शकों को पसंद है प्रेम

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

प्यार एक जज़्बात है। किशोर से लेकर अधेड़ व्यक्ति तक को सच्चे प्यार की तलाश होती है। स्वरूप चाहे अलग हो, मगर सच्चा प्यार सबकी चाहत होती है। सिर्फ फिल्म के परदे पर ही नहीं, आम लोगों की जिंदगी में भी प्रेम कहानियां होती है। लेकिन, जब दर्शक उन्हें परदे पर देखता है, तो उसे वो 'लार्जर देन लाइफ' नजर आती हैं। असल में दर्शक फिल्मों के जरिए अपने प्यार के सपनों को पूरा करने की कल्पना करता है। यही वजह है कि फिल्मों में प्रेम कहानियों पर बनी फिल्में ज्यादा पसंद की जाती और बॉक्स ऑफिस पर ऐसी फ़िल्में कमाई का नया रिकॉर्ड बनाती है। दरअसल, सिनेमा में प्रेम कथाओं का इतिहास बेहद समृद्ध और विविधता से भरा रहा है। शुरुआती दौर से आज तक प्रेम, रोमांस और कोमल भावनाओं को प्रमुख विषय के रूप में फिल्माया जाता रहा है, जो दर्शकों की भावनाओं के साथ गहराई से जुड़ता है। फिल्म इतिहास के पन्ने पलटे जाएं तो 1930 से 1950 के दशक में प्रेम कहानियों को सामाजिक और पारिवारिक मूल्यों के संदर्भ में दर्शाया गया था। उस समय काल में 'देवदास' जैसी फिल्में बनी जिसने प्रेम, त्याग और सामाजिक बंधनों जैसे मसलों को उजागर किया। इस दौर में प्रेम को आदर्शवादी और भावनात्मक रूप से चित्रित किया जाता था।

इसके बाद फ़िल्में आजादी की कहानियों में उलझ गई। 1960-70 का दशक फिर प्रेम कहानियों से गुलजार रहा। इस दौरान प्रेम कहानियों में अधिक यथार्थवादी और समकालीन विषयों को शामिल किया गया। 'प्रेम कहानी' और 'लव स्टोरी' जैसी फिल्मों ने प्रेम और व्यक्तिगत संघर्षों के जटिल पहलुओं को दर्शाया। मनोरंजन के साथ इन फिल्मों ने प्रेम, दोस्ती और पारिवारिक रिश्तों के बदलते स्वरूपों पर भी प्रकाश डाला। 1980-90 के दशक की प्रेम कहानियों में संगीत, नृत्य और भावनात्मक दृश्यों का अधिक उपयोग किया गया। 'मैंने प्यार किया' और 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' जैसी फिल्मों ने युवा दर्शकों को आकर्षित किया और प्रेम को एक सुखद और आशावादी दृष्टिकोण से चित्रित किया। इन फिल्मों ने प्रेम, दोस्ती, और परिवार के महत्व पर जोर दिया। लेकिन, 2000 के बाद की लव स्टोरी में सामाजिक मुद्दे, अंतर-सांस्कृतिक प्रेम और प्रेम के विभिन्न रूप शामिल किए गए। 'गदर' और 'तेरे नाम' जैसी फिल्मों ने प्रेम, देशभक्ति और सामाजिक संघर्षों के बीच के जटिल संबंधों को उजागर किया। सच्ची घटनाओं पर बनी 'छपाक' जैसी फ़िल्में भी पसंद की गई।

'सैयारा' की सफलता की एक बड़ी वजह यह भी मानी जा सकती है कि दर्शक ओटीटी की उन फिल्मों और वेब सीरीज से ऊब चुके हैं, जिनमें हिंसा और खून खराबा के अलावा कुछ नहीं होता। रणवीर कपूर की 'एनिमल' जैसी फिल्में भी कम नहीं है। ऐसे माहौल में दर्शकों को कुछ अलग से मनोरंजन की जरुरत थी, जिसे 'सैयारा' ने काफी हद तक पूरा किया। देखा जाए तो फिल्म के कथानक में कोई नयापन नहीं है, जो दर्शकों को बांधकर रखे। ये फिल्म दक्षिण कोरिया की 2004 में आई फिल्म ;ए मोमेंट टू रिमेंबर' का अनऑफिशियल अडॉप्टेशन है। इसी कहानी पर 2008 में अजय देवगन की फिल्म 'मैं, तुम और हम' आ चुकी है। इसमें काजोल का किरदार अल्जाइमर से पीड़ित होता है। इस फिल्म से प्रभावित 'सैयारा' की कहानी लिखते समय ध्यान रखा गया कि खून खराबा से ऊबे दर्शकों को कैसे भावनात्मक तरीके से रुलाया जाए। नायक और नायिका में तालमेल भी मुश्किल से बनता है, पर जब दोनों एक-दूसरे की पीड़ा को समझते हैं, तो जुड़ जाते हैं। शराबी बाप का परेशान बेटा और अल्जाइमर की मरीज लड़की में नजदीकी बढ़ जाती है और इमोशनल दर्शक फिल्म को हिट करा देते हैं।

आज के दौर में प्रेम कथा की नई परिभाषा रची है फिल्म 'सैयारा' ने। बिना प्रचार के चुपके से आई नए कलाकारों की इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर

कमाई का नया कीर्तिमान रच दिया। देखा जाए, तो फिल्म की कहानी में कोई नयापन नहीं है। फिर भी इस फिल्म में ऐसा क्या है, जो इसने इतनी सफलता और लोकप्रियता दी। 'सैयारा' की नई जोड़ी अहान पांडे और अनीता पड्डा में दर्शकों को पेड़ की नई कोपल सा अहसास हुआ। इसी ताजगी ने 'सैयारा' को सफलता दिलाई। हिंदी सिनेमा खुद लगभग सवा सौ साल की यात्रा पूरी कर चुका है। लेकिन, देखा जाए तो इन सालों में दर्शकों को हमेशा से युवा सितारों की चाहत रही, जो बड़े परदे के जरिए उनके दिलों को धड़काए रखे और ताजगी का अहसास कराए। लेकिन, सिनेमा की बाल्यावस्था के दौरान हिंदी सिनेमा को ऐसे सितारों ने धड़काया, जो खुद तो जवानी की दहलीज पार कर चुके थे। याद कीजिए उस दौर के उन हीरो को जो कहीं से युवा दिखाई नहीं देते थे। फिर भी दर्शक उनके आकर्षण में बंधे रहे। इसलिए कि तब समाज में सिनेमा को अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता था। इसलिए सभ्य समाज के कम ही लोग इससे जुड़ पाए थे। जो जुड़े वे भी, वह अपनी जवानी को पार कर चुके थे।

सिनेमा में प्रेम कहानियां वाली फिल्मों में नए चेहरों को सामने लाने की एक परंपरा सी रही है। इतिहास गवाह है कि फिल्मों में नई उम्र की नई फसल लगाने के लिए प्यार की खेती सबसे ज्यादा उपजाऊ रहती है। फिर चाहे वह बॉबी (ऋषि कपूर-डिंपल कपाड़िया), ट्विंकल खन्ना-बॉबी देओल (बरसात), कुमार गौरव-विजयता पंडित (लव स्टोरी), संजय दत्त-टीना मुनीम (रॉकी),सनी देयोल-अमृता सिंह (बेताब), कमल हासन-रति अग्निहोत्री (एक दूजे के लिए), आमिर खान (कयामत से कयामत तक) हो या सलमान खान-भाग्यश्री (मैंने प्यार किया) हो। ये सभी पहली बार परदे पर आए थे। अजय देवगन-मधुश्री (फूल और कांटे), रितिक रोशन-अमीषा पटेल (कहो ना प्यार है), राहुल रॉय-अनु अग्रवाल (आशिकी), शाहिद कपूर-अमृता राव (इश्क-विश्क), दीपिका पादुकोण-शाहरुख़ खान (ओम शांति ओम), इमरान खान (जाने तू या जाने ना), रणबीर सिंह-अनुष्का सिंह (बैंड बाजा बारात), आलिया भट्ट-सिद्धार्थ-वरुण (स्टूडेंट ऑफ द ईयर) आदि भी नए चेहरे थे।

प्रेम कहानियों के मामले में फिल्म इंडस्ट्री हमेशा से अमर रहा है। 'मुगल-ए-आजम' और 'देवदास' से लगाकर 'सैयारा' तक हर बार प्यार के रूहानी जज्बात को दर्शकों ने पसंद कर अपने दिलों में बसाया। हिंदी फिल्मों की अमर कही जाने वाली प्रेम कहानियों की फेहरिस्त बहुत लंबी और समृद्ध है। मुगल-ए-आजम, आवारा, कागज के फूल, प्यासा, साहिब बीवी और गुलाम, पाकीजा, कश्मीर की कली, आराधना, सिलसिला, दिल है कि मानता नहीं, साजन, दिल, उमराव जान, 1942 ए लव स्टोरी,दिलवाले, दुल्हनिया ले जाएंगे, कुछ कुछ होता है, रंगीला, कल हो न हो, जब वी मेट जैसी फिल्मों के बाद फिल्मों में यंग जनरेशन के प्यार को परिभाषित करने के लिए प्रेम कथाएं रची गई। जिसमें हीरो, रहना है तेरे दिल में, बचना ऐ हसीनों, सलाम नमस्ते, लव आजकल, ये जवानी है दीवानी, वेक अप सिड, अजब प्रेम की गजब कहानी, रॉकस्टार, बर्फी, टू स्टेट्स, आशिकी टू,कॉकटेल, शुद्ध देसी रोमांस, तनु वेड्स मनु, मसान, तमाशा, ऐ दिल है मुश्किल, बरेली की बर्फी जैसी कई फिल्में रही जिनकी गिनती तो ख़त्म होने से रही।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

जूनियर एनटीआर का जुनून, पोस्टर को खून का तिलक

साउथ के सुपरस्टार जूनियर एनटीआर अब बॉलीवुड के मैदान में उतर चुके हैं। वे भी सीधे वाईआरएफ की हाई-ऑक्टेन एक्शन फ्रेंचाइजी 'वार-2' के साथ। उनके साथ इस बार स्क्रीन पर नज़र आए हैं बॉलीवुड के हैंडसम हंक ऋतिक रोशन। फैंस के लिए यह एक ड्रीम कॉम्बिनेशन है। दो पॉवरफुल एक्शन स्टार्स एक साथ, एक ही स्क्रीन पर। फिल्म के ट्रेलर रिलीज से लेकर पहले शो तक, सोशल मीडिया पर वॉर 2 का ही जलवा छाया हुआ है। थिएटर के बाहर का माहौल किसी त्योहार से कम नहीं। ड्रम्स की आवाज़, पटाखों की गूंज, और हर तरफ जूनियर एनटीआर और ऋतिक के कटआउट्स पर फूलों की बारिश हो रही है। इस जबरदस्त माहौल में एक वायरल वीडियो ने सबका ध्यान खींच लिया, जिसमें जूनियर एनटीआर के एक फैन ने अपने

स्टार के लिए ऐसी दीवानगी दिखाई कि हर कोई हैरान रह गया।

एक वीडियो में जूनियर एनटीआर का एक डाई-हार्ड फैन इतना एक्साइटेड हो गया कि उसने अपना अंगूठा काट लिया और पोस्टर पर खून का तिलक लगाया। जिसने भी यह वीडियो देखा वो दंग रह गया। सुबह-सुबह थिएटर के बाहर जुटे फैंस ने पटाखे फोड़े, फ्लेयर्स जलाए और स्क्रीनिंग से पहले पूजा तक की। फिल्म प्रमोशन के दौरान हैदराबाद में ऋतिक और जूनियर एनटीआर एक इवेंट में पहुंचे थे, लेकिन वहां भीड़ बेकाबू हो गई। जूनियर एनटीआर ने माइक पर गुस्से में कहा 'भाई, क्या मैं चला जाऊं? जब मैं बोलूं तो चुप रहिए।' फिल्म रिलीज से पहले ऋतिक और जूनियर एनटीआर दोनों ने फैंस से गुजारिश की कि सोशल मीडिया पर फिल्म के स्पॉयलर शेयर न करें, ताकि हर दर्शक थिएटर में वही मजा लें, जो पहले दिन देखने वालों ने लिया.वॉर 2 की रिलीज और भी खास इसलिए है, क्योंकि यह रजनीकांत की फिल्म 'कुली' से सीधी टक्कर ले रही है। दोनों फिल्मों की एडवांस बुकिंग रिकॉर्ड तोड़ रही हैं।

दूसरे ही हफ्ते में स्मृति का टीआरपी में पिछड़ा

टीवी स्टार से राजनीति में मैदान में आई स्मृति ईरानी फिर छोटे परदे पर लौट आई। लेकिन, जो जादू उन्होंने 'क्योंकि, सास भी कभी बहू थी' सीजन में किया था, वो जादू अब ख़त्म हो गया। नए हफ्ते की टीवी टीआरपी रिपोर्ट ने चौंका दिया। स्मृति ईरानी के शो 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' पहले नंबर से सीधा चौथे नंबर पर पहुंच गया। लॉन्च होने के बाद जहां पहले हफ्ते में इसने 'अनुपमा' से नंबर-1 का ताज छीन लिया था, वहीं दूसरे ही हफ्ते में यह औंधे मुंह गिर गया। यह सीधे चौथे पायदान पर पहुंचा। यह एकता कपूर के लिए भी चौंकाने वाली बात है। यही नहीं, राजन शाही के दो टीवी शो ने एकता कपूर के 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' को दूसरे ही हफ्ते में करारी मात दे दी।

बड़ा झटका तो 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' को लगा है, जो लॉन्च वाले हफ्ते में नंबर वन की पोजीशन से सीधा चौथे नंबर पर पहुंच गया। यह एकता कपूर के साथ-साथ दर्शकों के लिए भी झटका है। शो के यूं औंधे मुंह गिरने की चर्चा 'एक्स' पर भी हो रही है। यूजर्स का कहना है कि एकता कपूर को अब बड़ी सावधानी से फैसले लेने चाहिए। 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' को पिछले कुछ एपिसोड में मिक्स्ड रिस्पॉन्स मिला।

स्मृति ईरानी पर अपने रोल के लिए बॉडी डबल इस्तेमाल करने का भी आरोप लगा। एक्टिंग की भी आलोचना हुई। कुछ फैंस का कहना था कि स्मृति ईरानी और को-स्टार्स की एक्टिंग के बीच कोई कनेक्ट नहीं था। ऐसा लग रहा है कि स्मृति अलग से शूट करती हैं और बाकी को-स्टार्स एक साथ। ये सारे फैक्टर इसी टीआरपी को गिराने के लिए जिम्मेदार रहे। 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' को रुपाली गांगुली के 'अनुपमा' ने पछाड़ दिया।

समाज से सिनेमा तक चोरों और चोरियों की गूंज

अशोक जोशी

इन दिनों सड़कों, तमाम टीवी चैनलों और राजनीतिक रैलियों से लेकर संसद हॉल में 'चोर' शब्द की धूम मची है। सुबह उठते ही अखबार चोर, चोर का जो राग अलापना आरंभ करते हैं। रात को सोते समय तक टीवी की

खबरों में चोर का ही नाम होता है। राजनीति में भी इन दिनों 'चोर' शब्द छाया हुआ है। कांग्रेस का राजनीतिक मकसद विपक्ष को वोटों का चोर बताकर राजनीति करना है। पहले तो यह फार्मूला पिट चुका है। अब नई चोरी का यह फार्मूला पिट जाता है या हिट होता है उसके लिए कुछ साल तक इंतजार करना होगा।

हिंदी फिल्मों के लिए 'चोर' का फार्मूला हमेशा से हिट रहा है। यदि फिल्मों का इतिहास टटोल कर देखा जाए तो चोर शीर्षक से बनी अधिकांश फिल्में या गाने हिट ही हुए हैं। समाज में भी चोरी और चोरी की परम्परा बदस्तूर कायम है। बचपन में बच्चे चोर-सिपाही खेल में बड़ा आनंद लेते रहे थे। अब भले ही चोर-सिपाही जैसे परम्परागत खेल समाप्त हो गए हों, लेकिन समाज में पूरी तरह से लुप्त नहीं हुए। समाज क्या हमारी पौराणिक कथाओं में भी चोरी का उल्लेख मिलता है। गणेश चतुर्थी की रात चांद देखने पर चोरी का आरोप लगने की बात कही गई है। यहां तक कि सत्यनारायण से लेकर तमाम देवी देवताओं की कथाओं में भी चोरी के आरोप के किस्से प्रचलित है। हो भी क्यों नहीं, हमारे सबसे लाड़ले कृष्ण भगवान को भी माखन चोर के नाम से ही दुलारा जाता है।

बॉलीवुड की पहली हिट फिल्म कहलाने का श्रेय 1943 में प्रदर्शित अशोक कुमार की फिल्म 'किस्मत' को जाता है जिसने कोलकाता के एक सिनेमा हॉल में लगातार साढ़े तीन साल तक चलने का रिकॉर्ड बनाया था। 1975 में मराठा मंदिर में प्रदर्शित शोले के लगातार पांच साल से ज्यादा चलने तक 32 साल तक कायम रहा। मजे की बात यह है कि 'किस्मत' में अशोक कुमार ने चोर का चरित्र निभाया, वहीं 'शोले' के दोनों नायक धर्मेन्द्र और अमिताभ को भी चोर ही बताया गया।

हिन्दी फिल्मों में चोर का चरित्र एकदम ब्लैक-शेड वाला न होकर ग्रे-शेड वाला होता है, जो नायिका से लेकर दर्शकों का दिल

जीतकर बॉक्स ऑफिस को लूटने तक में कामयाब होता है। कई फिल्में ऐसी भी होती हैं, जिनमें क्लाइमेक्स से पहले तक तो नायक को चोर दिखाया जाता है, लेकिन आखिरी रील के आते-आते वह पुलिस बन जाता है। 'ज्वेल थीफ' इस तरह की सबसे ज्यादा मनोरंजक फिल्म थी, जिसमें दर्शक आखिर तक देव आनंद को चोर ही समझते रहते हैं /लेकिन क्लाइमेक्स में अशोक कुमार को चोर के रूप में देखकर सब चौंक जाते है।

इन्ही 'ज्वेल थीफ' अशोक कुमार ने आरंभिक दिनों कई आपराधिक फिल्मों में चोर की भूमिका निभाई। इसके बाद देव आनंद लगभग हर दूसरी फिल्मों में चोर ही नहीं महिला दर्शकों के चितचोर भी बनें। राज कपूर ने 'आवारा' में चोर की भूमिका निभाकर दुनियाभर में वाहवाही लूटी, तो उनके भाई शम्मी कपूर भी ज्यादातर फिल्मों में चोर बने। सबसे छोटे भाई शशि कपूर तो इससे एक कदम आगे निकले। वे एनसी सिप्पी की एक फिल्म में न केवल चोर बने, बल्कि चोर बनकर उन्होंने 'चोर मचाए शोर' में खूब शोर भी मचाया और बॉक्स ऑफिस पर पैसा भी बटोरा।

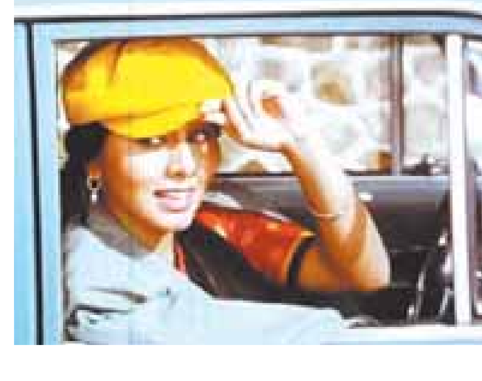

हिंदी फिल्मों के कई निर्माता-निर्देशकों को चोर विषयों पर फिल्में बनाने या निर्देशित करने में महारथ हासिल थी। गुरुदत्त गंभीर फिल्मकार बनने से पहले चोर विषय पर सीआईडी, 12'ओ क्लॉक जैसी सफल फिल्म बना चुके थे। बीआर चोपड़ा, यश चोपड़ा, विजय आनंद, शक्ति सामंत, राज खोसला जैसे फिल्मकारों ने हिन्दी फिल्मों में चोरों की खूब महिमा मंडित की। ऐसे ही निर्देशकों की बदौलत हिंदी फिल्मों के चोरों पर दर्शकों का खूब प्यार उमडा है।

फिल्मों में शायद ही कोई अभिनेता हो जो कभी चोर न बना हो। मनोज कुमार जैसा कलाकार भी 'बेईमान' में चोर का चरित्र को निभा चुका है। अशोक कुमार, देव आनंद, राज कपूर, राज कुमार, अमिताभ बच्चन, विनोद खन्ना, शत्रुघ्न सिन्हा, राजेश खन्ना और धर्मेंद्र जैसे पुराने नायकों ने कई फिल्मों में चोर बनकर दर्शकों को लुभाया तो अब ऋतिक, शाहरुख, सलमान और आमिर से लेकर रणवीर कपूर, रणवीर सिंह और कार्तिक आर्यन भी इस दौड में पीछे नहीं हैं। 'धूम' सीरीज की सारी फिल्मों का कथानक चोरों के इर्द गिर्द ही घूमता रहा।

चोर शीर्षक से बनी फिल्मों में ज्वैलथीफ, चोरी मेरा काम, चोर चोर, दो चोर, तू चोर मे सिपाही, हम सब चोर हैं, अलीबाबा चालीस चोर,चोर मचाए शोर, बम्बई का चोर, चोर और चांद, चितचोर ,थीफ ऑफ बगदाद, बैंक चोर, नामी चोर, महा चोर, चोर बाजार प्रमुख है। कुछ ऐसी फिल्में भी हैं, जिनमें नायक तो शरीफ होता है लेकिन नायिकाएं चोर होती हैं। जीनत अमान, मुमताज , हेमा मालिनी और श्रीदेवी ऐसी भूमिकाओं में खूब फबती रही है। नीतू सिंह की एक फिल्म का शीर्षक ही 'चोरनी' था।

फिल्मों के चोर केवल शीर्षक तक ही सीमित नहीं रहे। ऐसे कई हिन्दी गीत हैं, जिन्हें चोर शब्द के प्रयोग ने हिट बनाया है। ऐसे गीतों में चुरा के दिल मेरा , चुरा लिया है तुमने जो दिल तो, मै एक चोर मेरी रानी, शोर मच गया शोर आया बिरज का बांका, मेरी गली में आया चोर, इस दुनिया में सब चोर चोर, जब अंधेरा होता है आधी रात को एक चोर निकलता है। मैं एक चोर मेरी रानी, को लोगों ने खूब सुना और गुनगुनाया है। सलीम जावेद ने तो अपनी फिल्म 'दीवार' में अमिताभ के हाथ पर मेरा बाप चोर है लिखकर सिनेमा में चोर को न केवल अमर कर दिया, बल्कि बॉलीवुड को चोर विषय पर हिट फिल्म बनाने का एक फार्मूला भी बता दिया है।

देखने नहीं... सुनने काबिल है!

सिने जगत

प्रकाश पुरोहित

भारत में कम ही लोग होंगे, जिन्होंने 'शोले' नहीं देखी होगी। कई ऐसे मिल जाएंगे, जिन्होंने इतनी बार देखी है कि याद भी नहीं। उन दिनों इस बात की होड़ रहती थी कि किसने, कितनी, ज्यादा बार देखी। ज्यादातर झूट बोलते थे तो तो कुछ सच भी होते थे। तब 'शोले' की टिकट के अद्धे भी रजिस्टर में यूं चिपका कर रखे जाते थे, जैसे शादी का एलबम हो। हर आने वाले को दिखाया जाता, फिर यह भी याद नहीं रखा जाता कि बेचारा पहले भी कई बार देख चुका है।

उन दिनों यदि मोबाइल का आविष्कार हो गया होता तो यकीनन हर शो की सेल्फी जरूर ली जाती। अचरज तो इस बात पर होता था कि कॉलेज में शुरू हुए प्रेम का सबूत भी 'शोले' ही होता था कि मिलन-स्थल टाकीज से बेहतर क्या हो सकता था। प्रेमी कई बार देख चुका होता था तो उसका इंटरेस्ट फिल्म में कम होता था और लड़की का अमिताभ में कायम रहता था। दोनों अपने-अपने नजरिए से 'शोले' देख रहे होते थे!

तब कोई जय बना घूमता था तो कोई वीरू। गब्बर या सूरमा भोपाली कोई नजर नहीं आया, हां बसंती की आत्मा हर लड़की में सुनाई दे जाती थी, लेकिन जया भादुड़ी से आज जैसा ही सूमड़ा रिश्ता था। बस फर्क यह आया है कि पहले लड़कियां चिढ़ती थीं जय की वजह से और अब सभी बिदकते हैं जया के कारण।

अच्छी बात उन दिनों यह हुई कि शादी-ब्याह से ले कर मुंडन तक फिल्मी गीत बजना बंद हो गए थे भोंगे पर! बजना। 'शोले' के संवाद ही लगा दिए जाते थे तो मेहमानों को भूख भी नहीं सताती थी और खाने के बजाय सुनने की प्यास बढ़ती जाती थी। इसमें भी मजेदार यह होता था कि सुनता कोई नहीं था, आगे- आगे बोल कर अपनी याददाश्त और प्रतिभा का दिखावा किया जाता था। लाउड-स्पीकर पर गब्बर बोल रहा होता था और पूरा पांडाल कोरस में साथ दे रहा होता था।

तब अभिनय की कोई बात नहीं करता था, निर्देशन का सवाल नहीं था, संगीत भी महाबोदा था, गीत भी कमजोर थे, यानी जितनी भी खामियां हो सकती थीं, सब पूरे उफान पर हाजिर थीं। यह सोचने को भी कोई तैयार नहीं था कि बोले जा रहे संवाद का कोई मतलब भी है या नहीं। बस, मजा आ रहा था। यह संवाद का 'लौंडा-नाच' था, जिसे देखने वाले इसलिए पसंद कर रहे थे कि खुद भी नाच सकें। ऐसी-ऐसी खामियां थीं कि तौबा! गब्बर जब कालिया की तरफ पिस्तौल तानता है तो वह कहता है- 'सरदार आपका नमक खाया है।' इस पर गब्बर कहता है- 'अब गोली खा।' तब यह सोचने की जरूरत ही नहीं समझी गई कि 'सरदार मैंने आपका नमक खाया है' यह संवाद इसलिए बुलवाया गया ताकि यह कहा जा सके कि अब 'गोली खा', वरना कोई यह कैसे कहता कि 'आपका नमक खाया है!' किसी को नमक हराम तो कहा जा सकता है, लेकिन कोई खुद यह कहे, गलत है, लेकिन उस दौर में सब चल रहा था कि मजेदार था और इमरजेंसी का दौर था।

'शोले' उस दौर में इतनी कामयाब (महान नहीं) रही तो बड़ी वजह यह भी थी कि दुनिया हमारे सामने उतनी खुली नहीं थी। कितनी फिल्मों का झूठन इस पकवान में डाला गया, आज होता तो शायद धर लिया जाता। कितने लोगों को याद है कि 'आदमी तीन और गोलियां छह', यह दृश्य 'गुमनाम' फिल्म से था और कलाकार थे प्राण। अंग्रेजी फिल्मों के तो पूरे पूरे सीन ही उड़ा लिए थे। यह विदेशी मसाले की देसी भेल थी। मौसी और जय संवाद तो महाबासी था!

यह बात भी याद रखने लायक है कि अमजद खान ने शोले के बाद सलीम-जावेद के साथ फिर काम नहीं किया। जिसने गब्बर बनाया, उसी को ठेंगा दिखा दिया। क्या वजह रही होगी! जावेद ही अमजद को लाए थे नाटक से फिल्म के लिए, लेकिन जब काम करते देखा तो मन बदल लिया। दूसरे कलाकार की खोज होने लगी। अमजद ने निवेदन किया कि जब तक शूटिंग हो रही है, यहीं रहने दें, यानी रामगढ़ में और फिर ऐसी कायापलट की कि रमेश सिप्पी अड़ गए। फिर क्या हुआ, इतिहास है। कह सकते हैं कि 'शोले' की अम्मा तो 'मेरा गांव-मेरा देश' थी! 'प्रतिज्ञा' कहीं बेहतर फिल्म थी, इसीलिए धर्मेन्द्र नहीं मानते, शोले उनकी खास फिल्म है।

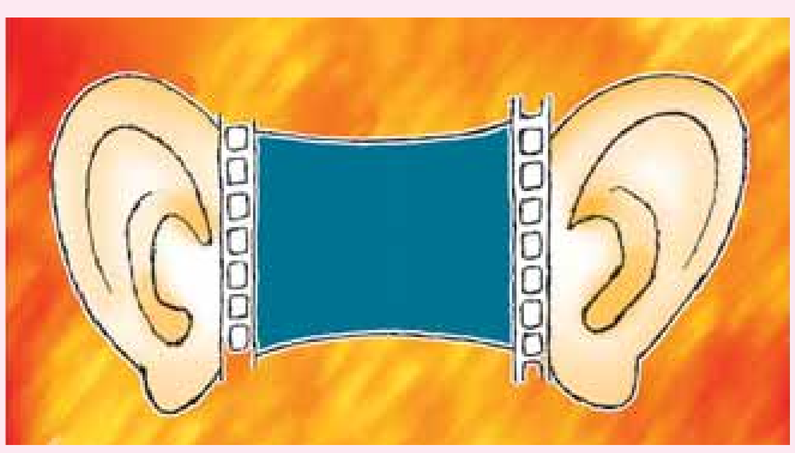

ये बातें मुझे आज इसलिए याद आ रही हैं कि मैंने 'शोले' दुबारा देखने की कभी हिम्मत ही नहीं की। फिल्म मजेदार थी, लेकिन बगैर सिर-पैर की। वो भी चल जाता, लेकिन जिस तरह गब्बर ने ठाकुर के परिवार की हत्या की थी और आखिर में बाल-कलाकार अलंकार को गोली मारी थी, आंखें बंद कर ली थीं और मन हुआ था कि उठ कर सिनेमा हाल से भाग जाऊं। जब मुंबई के मराठा मंदिर में 'शोले' को चलते पूरे पांच साल हो गए और उसका आखिरी शो था, तब नईदुनिया के संपादक रज्जू बाबू (राजेंद्र माथुर) ने मुझसे रिपोर्टिंग के लिए कहा था। टिकट तो ब्लैक नहीं हो रहे थे और भीड़ भी ज्यादा नहीं थी, लेकिन तब भी टिकट खरीद कर अंदर नहीं गया था और बाहर से ही 'अब भी सुलग रहे हैं शोले' रिपोर्ट लिखी थी। 'शोले की आंच बर्दाश्त नहीं थी पांच साल बाद भी!

इस लिहाज से मुझे यही लगता रहा कि रेडियो नाटक अच्छा है शोले, बजाय फिल्म के, क्योंकि इसे सुनना ही अच्छा लगता रहा। अच्छी चुटकुलेबाजी है। पूरी फिल्म ना भी देखें तो सुन कर फिल्म समझ सकते हैं या कल्पना तो कर ही सकते हैं। मेरा यह मानना है कि देखने से बेहतर है, इसे सुना जाए और अपनी कल्पना की फिल्म का आनंद लिया जाए।

यदि उस समय स्टैंड-अप कॉमेडी का दौर होता तो 'शोले' के संवाद पर शायद ही कोई हंसता! अब तो शर्म आती होगी कि इस बात पर भी उस समय हंस लेते थे! क्या इमरजेंसी का उतारा था? अपनी-अपनी राय है, पचास साल हो गए शोले को, लेकिन मेरी राय आज भी बदली नहीं है, बदलेगी भी नहीं, चाहे सौ साल ही क्यों ना हो जाएं। ।

बेपरवाह समाज और गायब होती लड़कियाँ

...और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

मैंने कुछ आंकडे जुटाए हैं। 2023 में देश की 13 लाख महिलाएं गुम हुईं। एक संस्था का दावा है कि इनमें एक बड़ा हिस्सा 'लव जिहाद' का शिकार हुआ है और धर्म परिवर्तन होने के कारण इन गुमशुदा महिलाओं का पता नहीं चल पाता है। हिस्सा 'ऑनर किलिंग' में भी जा रहा है। अभी भी देश में लव मैरिज और वो भी दूसरी जाति में अपराध माना जाता है। स्वयं माता-पिता, परिवार वाले, ऐसी लड़की की हत्या कर देते हैं। कुछ समुदायों में तो पैदा होते ही कन्या को मार दिया जाता है। एक वजह बहुत बड़ी ये हो रही है कि परिवार, पुलिस, कानून उन्हें उतनी सुरक्षा नहीं दे पा रहा है पर आखिर लड़कियों के आगे बढ़ने में कब तक कोई उनकी सुरक्षा के लिए पीछे-पीछे चलेगा? कभी तो उन्हें अकेले होना ही पड़ता है।

2011 की जनगणना के हिसाब से सबसे ज्यादा लड़कियों की संख्या केरल में प्रति 1000 पुरुषों पर 1089 महिलायें हैं (जी समाचार के अनुसार)। केरल में लड़कियों की संख्या ज्यादा होने के कई कारण है जिनमें बेहतर स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और सामाजिक विकास शामिल है। जाहिर सी बात है उसमें स्त्री का योगदान बहुत है।

कुछ समय से, घरों से निकलते ही, कोचिंग से, ट्रेन में बैठ कर ना उतरने वाली, ऑफिस से घर ना वापस आने वाली, जॉब से आधी रात को लौटती, हादसों का शिकार होती औरतें, लड़कियां कहां, गायब हो रही हैं?

मैंने कुछ आंकडे जुटाए हैं। 2023 में देश की 13 लाख महिलाएं गुम हुईं। एक संस्था का दावा है कि इनमें एक बड़ा हिस्सा 'लव जिहाद' का शिकार हुआ है और धर्म परिवर्तन होने के कारण इन गुमशुदा महिलाओं का पता नहीं चल पाता है। हिस्सा 'ऑनर किलिंग' में भी जा रहा है। अभी भी देश में लव मैरिज और वो भी दूसरी जाति में अपराध माना जाता है। स्वयं माता-पिता, परिवार वाले, ऐसी लड़की की हत्या कर देते हैं। कुछ समुदायों में तो पैदा होते ही कन्या को मार दिया जाता है। एक वजह बहुत बड़ी ये हो रही है कि परिवार, पुलिस, कानून उन्हें उतनी सुरक्षा नहीं दे पा रहा है पर आखिर लड़कियों के आगे बढ़ने में कब तक कोई उनकी सुरक्षा के लिए पीछे-पीछे चलेगा? कभी तो उन्हें अकेले होना ही पड़ता है।

सुना है अंगों का सौदा उसे वाले सौदागर भी उन्हें उठा कर ले जाते हैं। सबसे बड़ा कारण हम जानते है देह शोषण। विदेशों में बड़ी तादाद में भारतीय लड़कियों की डिमांड है। उनकी तस्करी की जाती है। एनसीआरबी के अनुसार सबसे ज्यादा लड़कियां मध्य प्रदेश से गायब होती हैं। ये सबसे शर्मनाक आंकड़ा है क्योंकि इसी प्रदेश में लाड़ली बहनों को धन से मालामाल कर रहे है परंतु उनकी सुरक्षा पर कुछ व्यय नहीं होता है। मासूम बच्चियों का अपहरण कर उनका बलात्कार कर, मार कर उन्हें फेंक दिया जाता है। पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र दूसरे नंबर पर आते हैं। आंकड़ें बताते हैं कि देश में रोज 345 लडकियों गायब हो रही हैं। इसमें से 170 का अपहरण हो जाता है, 172 गायब हो जाती हैं, जिनका कुछ पता नहीं चलता, उन लड़कियों की हत्या कर दी जाती है। फिर भी मैं संतुष्ट नहीं है क्योंकि मध्य प्रदेश का अखबार रोज जाने कितनी बच्चियों की हत्याओं की खबर लाता है। 2019 और 2021 के बीच जब 1313 लाख लड़कियां गायब हुई तब चौंकाने वाली बात ये थी कि उनमें से 2.51 लाख लड़कियां मध्य प्रदेश से गायब हुई।

हाँ, घरेलू हिंसा और आत्महत्या के आंकड़ों में भी कई महिलाएं गायब हो हुई हैं, जिनके बहुत कम केस ही सामने आ पाते हैं। अब जो ताजा आंकड़ा सामने आ रहा है वो है जाति-धर्म के आधार पर जिसे लव जिहाद का नाम दिया गया। दिल्ली के अंडरग्राउंड हॉल से कई लड़कियां बरामद हुई जिन्हें डिमांड आने पर नशे का इंजेक्शन लगाकर जगह-जगह सप्लाई किया जाता था। 23 बच्चियों को हाल ही में छुड़ाया गया है। देह शोषण सबसे बड़ा मुद्दा है पर अब एक नई बात सामने आ रही है कि आतंकवादी गतिविधियों में भी इन लड़कियों का इस्तेमाल किया जा रहा है।

ये बात हुई कि गायब होती लड़कियां किन गलत धंधों में फंस जाती हैं। उन्हें मां- बाप पढ़ने नहीं भेजते इसलिए भी हमारे देश में लड़कियां कम पढ़ पाती हैं, लोग लड़की पैदा नहीं हुआ चाहते तो फिर क्या किया जाए?

देखिए, अगर हम विकसित देश बनाना चाहते हैं तो सब लड़कियों को पढ़ाना ही होगा। उन्हें सेल्फ

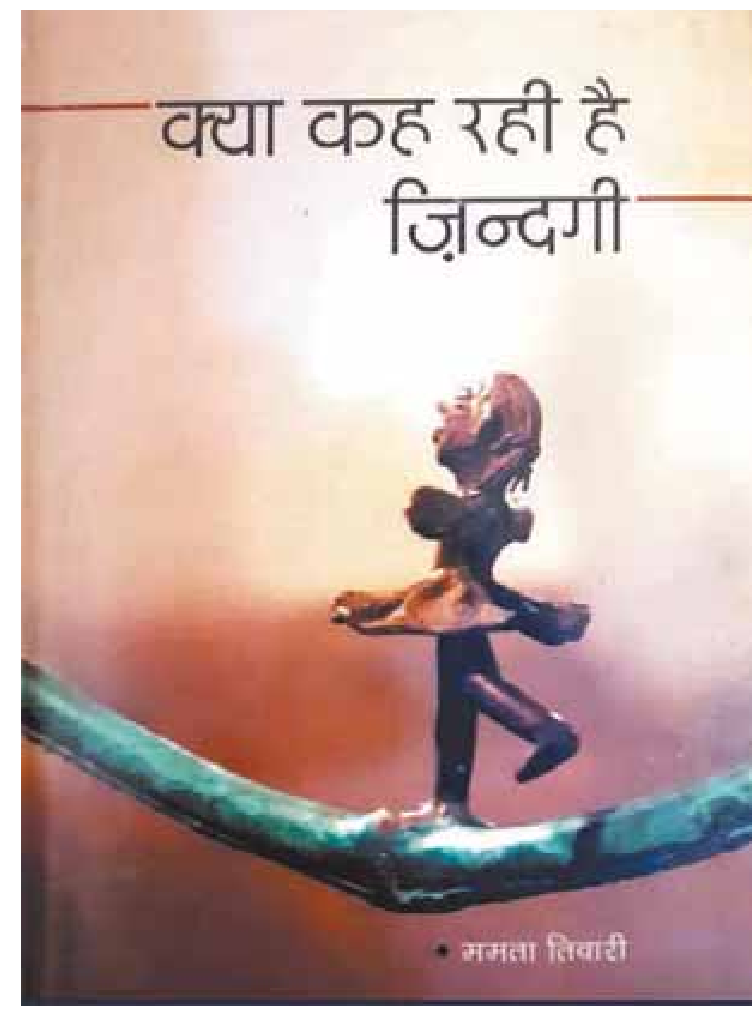

विचार

भगत सिंह को कितना जानते हैं हमारे युवा

डॉ. संजीव कुमार

लेखक सहायक प्राध्यापक हैं।

भारत के हजारों वर्ष के इतिहास में भगत सिंह जैसा मातृभूमि से प्रेम करने वाला, देश के लिए निर्भीक होकर मरने वाला, दूरदर्शी, सहनशील,युवा नेतृत्वकर्ता नायक दूसरा कोई नहीं हैं। एक संभ्रान्त परिवार में जन्म लेने के बावजूद उन्होंने अपने लिए कांटों की राह चुनी। देशप्रेम का एक दौर ऐसा भी आया जब 60 वर्ष के विश्व ख्याति प्राप्त कर चुके महात्मा गांधी से भी ज्यादा देश में भगत सिंह कि चर्चाएं होने लगी थी। देश के युवा गांधी की जगह भगत सिंह को अपना नायक मानने लगे थे। भारत के क्रांतिकारी इतिहास में 116 दिन तक (क्रूर यातना के साथ) भूख हड़ताल कर अंग्रेजो कों भी रुला देने वाले भगत सिंह का अपने आप में एक मर्मात्मक इतिहास हैं।

आखिर इस 23 साल के सुन्दर, सुडौल नौजवान की ऐसी क्या जरूरत थी, उसने अपने सुंदर जीवन का एक भयानक अंत क्यों चुना?

आज जब हमारे देश के युवा अपने ही आजाद मुल्क में अपना भविष्य नहीं बचा पा रहे हैं। अपना कैरियर नहीं चुन पा रहे हैं। दिशाहीन होकर राजनेताओं के बहकावे में आकर सही और गलत का फैसला नहीं ले पा रहा है तों ऐसी स्थिति में वाजिब है कि वह भगत सिंह को अपना नायक माने और उनके मार्गदर्शन में देश और स्वयं के लिए एक नई रोशनी की तलाश करें। आज देश की आबादी 60 प्रतिशत युवाओं की ऊर्जा से भरा हुआ हैं, पर यह ऊर्जा ज्यादा समय तक टिकने वाला नहीं। लेकिन भारत का दुर्भाग्य देखिए के युवा आज अपने भविष्य की की तलाश में खोए हुए हैं। इसका कारण यह है कि यह युवा गलत नायकों के पीछे चल रहे हैं। पुस्तकों से दूर है और सोशल मीडिया को ही अपनी किताब और दुनिया मान रहे हैं। भारत के शिक्षा की दशा कभी भी उन्नत नहीं रही है और इधर कुछ दशकों से राजनेताओं ने तो उन्हें और दिशाहीन कर दिया है तिस पर यह सोशल मीडिया उनके सोचने और समझने की शक्ति को भी खा रहा है। अच्छी डिग्री हासिल करने के बाद यदि उसे रोजगार हासिल नहीं हो रही तो वह सोशल मीडिया पर उल्टे फूलटे कारनामे करके अपने जीवन को बचाने की कोशिश करने लगता है। वह समझ नहीं पा रहा कि उसने जीवन में क्या गलती की है जिसकी उसे सजा मिल रही है।

आज चारों तरफ वोट चोरी और मतदान चोरी की बातें देखने को मिल रही हैं। संविधान बचाने की मुहिम चलाई जा रही है। बड़ी-बड़ी डिग्रियां लेकर के युवा बेरोजगार घूम रहे हैं, आखिर क्यों? क्योंकि उन्होंने गलत नायक चुना है, उन्होंने गलत नेता चुना है। ऐसा नेता जो आपको धर्मांध बनाएं, पाखंड बेचने वाले बाबाओं के कसीदे पढ़े। 24 घंटे जनमाध्यमों के जरिए आपके भाईचारा को तोड़ने की कोशिश करें। जाति, धर्म, क्षेत्र के नाम पर आप में हिंसा भरे और आपकी भीड़ को अपनी ताकत बनाकर स्वयं सत्ता हासिल करें ऐसे राजनेताओं से, साधु, महात्मा,मौलियों से जब तक आप दूरी नहीं बनाएंगे, तब तक आप और यह देश दोनों अंधकार में ही डूबा रहेगा।

आज 18 साल से 22 साल की युवा जिनकी उम्र उच्च शिक्षा और अच्छी शिक्षा हासिल करने की होती है। वे सुबह शाम मंदिरों के चक्कर लगा रहे हैं, पांच वक्त का नमाज अदा कर रहे हैं। धर्म बचाने के नाम पर एक दूसरे पर पत्थर चला रहे हैं तो उनके लिए बहुत जरूरी है कि वह भगत सिंह को पढ़े और समझे कि उस नवयुवक इस देश के लिए आपके लिए इतनी यातनाएं क्यों झेली।

आज जिन तीन महत्वपूर्ण समस्याओं से भारत जूझ रहा है उन समस्याओं पर भगत सिंह के विचार बहुत स्पष्ट थे। यह तीन समस्याएं हैं युवा शिक्षा, धर्म और सत्ता। युवाओं के लिए उनके विचार था कि जिस देश का युवा मंदिर मस्जिद जाने की वजाय स्कूल और कॉलेज में अपना समय व्यतीत करेगा तो देश का भविष्य अपने आप ही उज्जवल रहेगा। धर्म को लेकर वह बिल्कुल ही असहमत थे उनका मानना था की मनुष्य का भाग्य उसके हाथों में लिखा है उसे अपने परिश्रम पर यकीन रखना चाहिए। और सत्ता के लिए उनका स्पष्ट कहना था कि देश में ऐसा शासक होना चाहिए जो गरीब, किसान, बेरोजगार,महिलाओं, के हित के लिए काम करने वाली हो। परंतु आज हमारी समस्या है कि हम इन तीनों समस्याओं से घिरे हुए हैं।

आज जातीयता के दम्भ में जीने वाले हमारे युवा क्या यह जानते हैं कि भगत सिंह अपने पखाना साफ करने वाले 'बोघा' कर्मचारी कों मां कहते थे? इन मुद्दों पर अगर आप बात करेंगे तो आप नास्तिक कहलाएंगे आपको देश प्रेमी नहीं माना जाएगा। सोच के देखिए अगर आज भगत सिंह जिंदा होते तो क्या हमारे नेता उन्हें खुलेआम अपने विचार युवाओं के बीच रखने देते? तो फिर क्या फर्क हुआ गुलाम और आजाद भारत में। उन्होंने साफ कहा था कि हमें ऐसे आजादी बिल्कुल नहीं चाहिए जो गोरों के हाथ से छीन कर काले अंग्रेजों के हाथ में पहुंच जाए। और उनकी यह बात आज सही साबित हो रही है। आज गांधी हमारे नायक है, अंबेडकर हमारे नायक है, सरदार पटेल हमारे नायक हैं, पर भगत सिंह क्यों नहीं?

❒ यूके से

प्रज्ञा मिश्रा

'होटों पे ऐसी बात'... अब आम है!

सुबोध घोष की कहानी (फिल्म सुजाता-1979) को बिमल रॉय ने इस नफासत से परदे पर दिखाया कि दो शब्दों 'बेटी जैसी' का मतलब और असर को भूल नहीं सकता। यह कहानी उस दौर की है, जब छुआछूत के खिलाफ महात्मा गांधी की बातें असर तो करती थीं, लेकिन इसे खत्म करने में नाकाम ही रही थीं। 'अछूत कन्या' (1940) हो या नागराज मंजुले की हालिया दौर की 'सैराट' और 'फंड्री' या फिर 'आर्टिकल 15' और 'मसान'... सभी समाज में बढ़ती 'दरार' दिखाती हैं, लेकिन क्या फिल्मों से कोई बदलाव होता है? यह तो देखने वाले पर है कि किस शिद्दत से इन फिल्मों को महसूस किया, वरना बिना फिल्म देखे कहानी से आहत होने वाले कम नहीं हैं।

समाज को आईना दिखाती ऐसी ही फिल्म है- 'धड़क 2।' शाज़िया इकबाल की यह फिल्म 'परियेरुम पेरुमल' से प्रेरित है। देखने से पहले कहानी का अंदाजा हो या न हो, लव स्टोरी के परदे में भावुक फिल्म है। नीलेश अहिरवार (सिद्धांत चतुर्वेदी) और विधि (तृप्ति डिमरी) की इस कहानी में सब है, जो आज साफ-साफ कहा जाना जरूरी है। शुरू से अंत तक साफगोई है। 'दलित होता तो बच जाता, क्योंकि कोई उसे नहीं छूता तक नहीं' बताते हैं कि अब बातों को दबा-छिपा कर नहीं बल्कि साफ-साफ कहने की जरूरत है।

नीलेश की कहानी है, जिसमें ऊंची जाति का किरदार विधि है, जिसे लगता है कि अब मुझे फर्क नहीं पड़ता तो नीलेश को भी फर्क नहीं पड़ना चाहिए। विधि की लड़ाई में उसकी जाति का दबदबा मौजूद है और यह बात नीलेश कभी भूल ही नहीं सकता, क्योंकि उसे भूलने दिया ही नहीं जाएगा। कहता है कि मैं उड़ना चाहता था, लेकिन मेरा आसमान ही छीन लिया, क्योंकि जानता है कि हर कतार में पीछे ही खड़ा है।

'धड़क-2' से यह रास्ता दिखाई दे रहा है कि शायद यह प्रोडक्शन हाउस यंग लव स्टोरी के साथ समाज की उन बातों को सामने रखने की कोशिश कर रहा है, जो दबी आवाज में कही जाती हैं।

आने वाली 'धड़क-सीरीज' की फिल्मों का इंतजार रहेगा। वैसे भी नीरज घायवान की फिल्म 'होम बाउंड' बना कर करण जोहर और धर्मा प्रोडक्शंस ने हिम्मत की है। कहा जा सकता है कि 'धड़क-2' लव स्टोरी नहीं, हॉरर है, जो इस ऊंची और नीची जाति में बंटे समाज के हॉरर को यूं पेश करती है कि इसे देखने जाना ही चाहिए।